04 - कबीरा आप ठगाइए

05 -लोक रीतियों को कृतियों में ढालते- संवारते कलाकार...

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 05 अप्रैल, 2026

06 - प्रशिक्षण सिर्फ एक अवसर नहीं है, बल्कि यह निरंतर...

07 - बॉलीवुड के गानों ने हॉलीवुड में मचाया जादू

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 182, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

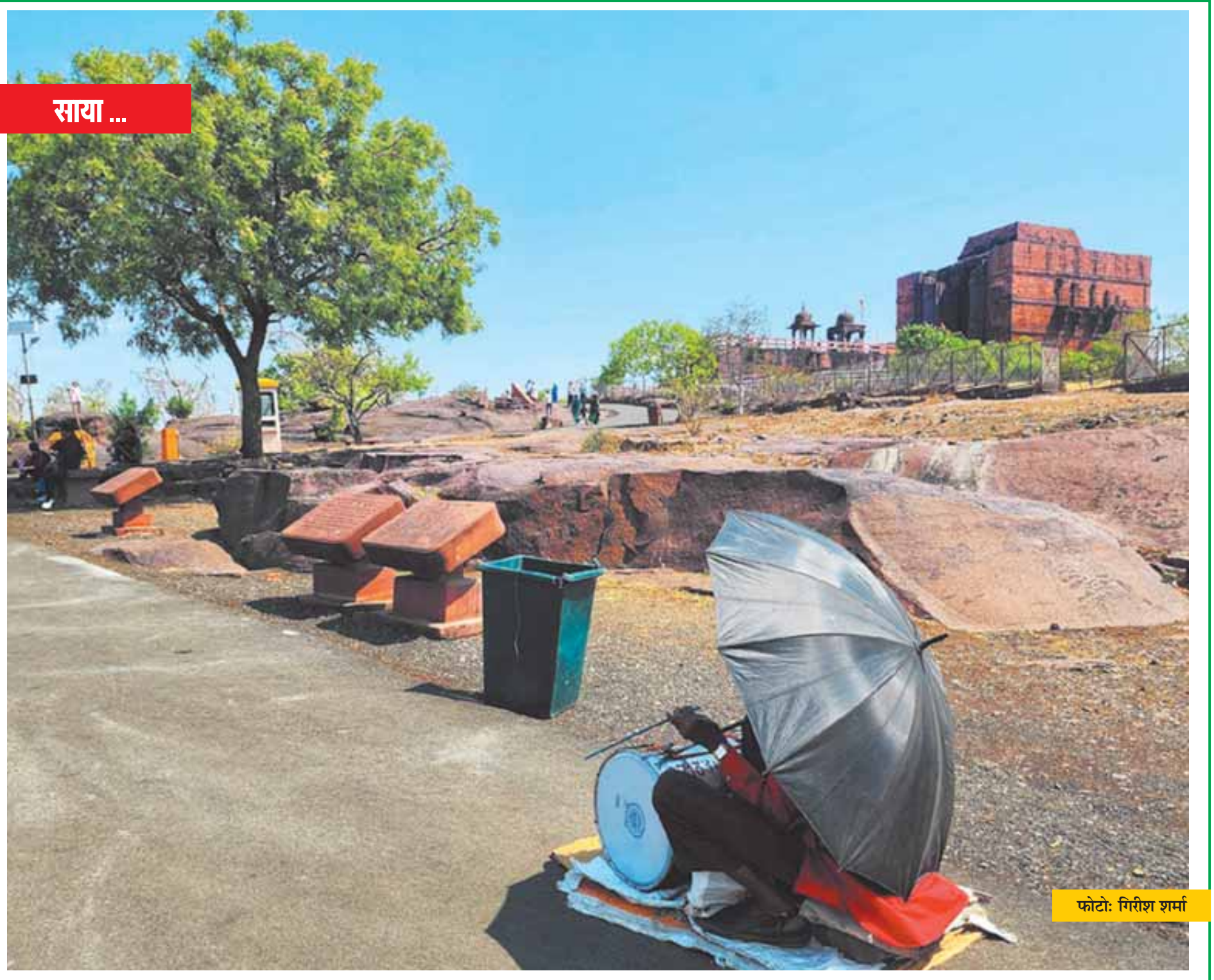

फोटोः गिरीश शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जीवन के सारे लोभ
और सारी इच्छाएँ
अनचाही शत्रुताएँ
और चाही गयी पीड़ाएँ
मेरा क्रोध आँसू
और मेरे मन की घृणा
मेरी इस देह के साथ
मिट्टी में मिल जाएँगे
बचे रहेंगे
बस प्रेम में उच्चरित शब्द

अगले वसंत इसी मिट्टी में
कई रंगों के फूल खिलेंगे।

– अनिल करमेल

केरलम में एलडीएफ जाएगी, एनडीए आएगी

● मोदी बोले-पहले भी यहां आया, इस बार हवा का रुख कुछ और है

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरलम के थिरुवल्ला पहुंचे पीएम मोदी ने कहा कि इस बार के चुनाव में केरलम में लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट की सरकार जाएगी और नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस की सरकार आएगी। उन्होंने कहा कि मैं पहले भी केरलम आया हूं, लेकिन इस बार हवा का रुख कुछ अलग है। केरल एक ऐतिहासिक बदलाव के लिए तैयार है। इस बार सत्ता परिवर्तन होगा। पीएम ने कहा कि यहां सबरीमाला रेलवे प्रोजेक्ट इस इलाके में नई संभावनाएं खोल सकता है। यह सबरीमाला से सीधी कनेक्टिविटी बढ़ाएगा, लोकल बिजनेस को नई रफ्तार देगा और युवाओं के लिए रोजगार के नए रास्ते खोलेगा। जब बीजेपी की डबल इंजन वाली सरकार सत्ता में आएगी, तो ऐसी सभी रुकावटें दूर हो जाएंगी, यह मोदी की गारंटी है। आज केरलम में युवाओं का पलायन सबसे बड़ी चिंता है। यहां रोजगार के लिए इंडस्ट्री लगाने की जरूरत है।

लोकसभा और राज्यसभा में 33 फीसदी महिला आरक्षण होगा

पीएम बोले 33 फीसदी महिलाएं चुन कर आएंगी। लोकसभा-राज्यसभा में 33 फीसदी महिला आरक्षण होगा। 3 दिन के लिए 16-18 अप्रैल को बजट सत्र का सेशन होगा। जो कानून हमने पारित किया है। 2029 में लोकसभा के चुनाव से 33 फीसदी महिला आरक्षण का लाभ मिलना शुरू होगा। इसका फासदा हमारे दक्षिण भारत के राज्यों को मिले। हमने सभी विपक्षी दलों को मीटिंग में बुलाया है। मैं सभी राजनैतिक दलों से कहता हूं कि संसद में आए इस बिल को पारित करें। महिला आरक्षण से जुड़ा संशोधन बिल सर्वसम्मति पास होग। नारी शक्ति के हित से जुड़ा काम है। पीएम मोदी ने कहा कि हमारे केरल को भगवान ने बहुत सारी संभावनाएं और संसाधन दिए हैं। यहां समुद्र में ब्लू इकॉनमी में मौके हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव डोंगला में खगोल विज्ञान एवं अंतरिक्ष अनुसंधान पर आयोजित सत्र में हुए शामिल

अंतरिक्ष उपलब्धियां और सफलताएँ देश की वैज्ञानिक क्षमता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक : मुख्यमंत्री

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'महाकाल : द मास्टर ऑफ टाइम' के दूसरे दिन उज्जैन जिले की वराहमिहिर खगोलीय वेधशाला, डोंगला में ''भारत में खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान का वर्तमान और भविष्य' विषय पर आयोजित सत्र में सहभागिता की। सत्र में मुख्यमंत्री डॉ. यादव, देश की अंतरिक्ष उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं की महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत हुए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत जानकारियों को अत्यंत रोचक बताते हुए भारत की अंतरिक्ष उपलब्धियों पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि चंद्रयान-3 जैसी सफलताओं पर देश के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की उपलब्धियाँ युवाओं को विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

सत्र में प्रो. अनिल भारद्वाज, निदेशक, फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी , अंतरिक्ष विभाग, अहमदाबाद ने चंद्रयान-3 मिशन की उपलब्धियों की जानकारी देते हुए बताया कि 'विक्रम लैंडर' की सफल सॉफ्ट लैंडिंग भारत के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि रही। इसके साथ भारत चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में पहुँचने वाला विश्व का पहला देश बना। इस मिशन की सफलता में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने बताया कि 'प्रज्ञान रोवर' ने चंद्रमा की सतह पर महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन किए और इस लैंडिंग स्थल को 'शिव शक्ति पॉइंट' नाम दिया गया।

साथ ही उन्होंने चंद्रयान-4 (लूनर सैंपल रिटर्न मिशन), चंद्रयान-5 (LUPEX - भारत-जापान संयुक्त मिशन), वीनस ऑर्बिटर मिशन और मंगल लैंडर मिशन और वर्ष 2040 तक भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर उतारने की भारत की महत्वाकांक्षी योजनाओं की भी जानकारी दी। सत्र में डॉ. तरुण पंत, निदेशक, स्पेस फिजिक्स लेबोरेटरी, विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर, तिरुवनंतपुरम ने आयनोस्फियर एवं ऊपरी वायुमंडल की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अंतरिक्ष की गतिविधियाँ पृथ्वी के वातावरण और जलवायु को प्रभावित करती हैं।

अंतरिक्ष तकनीक राष्ट्रीय सुरक्षा का मजबूत आधार

नीति आयोग के सदस्य (विज्ञान) डॉ. वी.के. सारस्वत ने 'भारत की रक्षा के लिए अंतरिक्ष आधारित रणनीतियाँ' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अंतरिक्ष तकनीक आज विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। उन्होंने अपने जीवन के प्रारंभिक प्रेरणा स्रोत का उल्लेख करते हुए बताया कि बाल्यकाल में एक सैटेलाइट प्रक्षेपण की खबर ने उन्हें अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा दी। वैज्ञानिक डॉ. सारस्वत ने कहा कि आधुनिक समय में रक्षा तकनीक तेजी से बदल रही है और पारंपरिक हथियारों से आगे बढ़कर ड्रोन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित प्रणालियाँ विकसित हो रही हैं। उन्होंने रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र और स्टार्ट-अप्स की बढ़ती भूमिका को आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

बेटी की 'विदाई', बेटे की 'पढ़ाई' सब रह गया अधूरा

● मोतिहारी में जहरीली शराब जिंदगियों के साथ सपने भी लील गई

पटना (एजेंसी)। जहरीली शराब परीक्षण मांझी की जिंदगी के साथ उनका बेटी को डोली में बिठाकर ससुराल भेजने का सपना भी लील गई। प्रमोद यादव लोगों को दूध बेचते थे जो लोगों को सेहतमंद बनाए रखने के लिए जरूरी है, लेकिन शराब की लत के चलते उन्होंने जहरीला जाम पी लिया। मौत के साथ बेटे को ग्रेजुएट होते हुए देखने का सपना भी अधूरा रह गया। संपत साह को नशा करने के बाद आंखों से दिखना बंद हो गया। उनका परिवार कुछ समझ पाता, इससे पहले ही उनकी दुनिया में अंधकार छा चुका था। बिहार के मोतिहारी जिले में जहरीली शराब ने सात लोगों की मौत की कहानी लिख दी है। इसके साथ सात परिवारों की बर्बादी की कहानियां भी लिख दी गई हैं। यह ऐसी त्रासदी है जिसके पीड़ित परिवार जहरीली शराब से मिले जख्मों को ताजिंदगी नहीं भूल पाएंगे।

● **आंखें खो चुके 6 लोग शायद ही फिर कभी दुनिया देख सकें-** मोतिहारी में जहरीली शराब ने ऐसा कहर बरसाया कि तीन दिन में सात लोगों की जान चली गई। इसके अलावा 14 लोगों की हालत गंभीर है। इनमें से छह लोग अपनी आंखों की रोशनी खो चुके हैं। वे अब शायद ही कभी दुनिया को फिर से निहार सकेंगे। गुरुवार को हुई इस घटना में पहले दिन दो लोगों की और दूसरे दिन तीन लोगों की मौत हो गई। तीसरे दिन शनिवार को दो और लोग चल बसे। जहरीली शराब ने चंदू कुमार, प्रमोद यादव, परीक्षण मांझी, हीरालाल भगत, लालकिशोर राय, संपत साह और लड्डू साह की जान ले ली। जहरीली शराब पीने के कारण मरे यह सभी लोग मोतिहारी से करीब 50 किलोमीटर दूर स्थित गांव बालगंगा और परसोना में रहते थे।

परीक्षण का नादान बेटा कैसे करेगा बहन की शादी

परीक्षण मांझी अपने परिवार में कमाने वाले एक मात्र सदस्य थे। मांझी खेतीबाड़ी और मजदूरी करके परिवार का गुजारा चलाते थे। करीब एक माह बाद उनकी बेटी की शादी होने वाली थी। उनका परिवार इसके लिए तैयारियां कर रहा था। शादी का सारा कार्यक्रम तय हो चुका था और इसमें खर्च के लिए पैसा जुटाया जा रहा था। जहरीली शराब से उनकी मौत ने परिवार को गहन शोक में डुबे दिया है। उनके बेटे राकेश अब दुखी और उदास हैं। उन्होंने कहा, अब समझ में नहीं आ रहा है कि बहन की शादी कैसे होगी। परीक्षण मांझी गुरुवार को रात में मोतिहारी से गांव लौटे थे। घर पहुंचने पर उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। परिवार के लोगों को लगा कि तेज धूप में काम करने के कारण हुई थकान के कारण उनकी तबीयत बिगड़ गई। उन्हें नहीं पता था कि मांझी ने जहरीली शराब पी ली है। देर रात में जब उनकी तबीयत अधिक बिगड़ी तो उनको अस्पताल ले जाया गया।

यूपी में शिक्षामित्रों को इसी महीने से मिलेंगे 18 हजार

वाराणसी (एजेंसी)। सीएम योगी ने वाराणसी में शनिवार को 1.42 लाख शिक्षामित्रों और 24 हजार अनुदेशकों का मानदेय बढ़ाने का ऐलान किया। कहा- इसी महीने से शिक्षामित्रों को 18 हजार और अनुदेशकों को 17 हजार रुपए मानदेय मिलेगा। अभी तक शिक्षामित्रों को 10 हजार और अनुदेशकों को 9 हजार रुपए ही मिल रहे थे। सीएम ने 26 फरवरी को बजट सत्र के दौरान विधानसभा में शिक्षामित्रों और अनुदेशकों की सैलरी बढ़ाने की बात कही थी। शिक्षा मित्रों का 25 जुलाई 2017 को हुआ था समायोजन रद्द यूपी में 2001 से शिक्षामित्रों की नियुक्ति शुरू हुई थी। सपा की सरकार ने 2013-14 में शिक्षामित्रों को सहायक अध्यापक के पद पर समायोजित किया था। जिनका समायोजन नहीं हुआ उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट में इसके खिलाफ याचिका दायर की। हाईकोर्ट ने 12 सितंबर, 2015 को इन शिक्षामित्रों का समायोजन रद्द करने का आदेश दिया। सपा सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की। 25 जुलाई, 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए शिक्षामित्रों का समायोजन रद्द कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश से एक साथ 1.72 लाख सहायक अध्यापक शिक्षामित्र बने।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 05 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

जम्मू-कश्मीर में मौसम ने बिगाड़े हालात, रास्ते जाम

कई जगहों पर लैंडस्लाइड,एनएच-44 पर गिरे पत्थर,दोनों तरफ से ट्रैफिक बंद

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-44) पर कई जगहों पर भूस्खलन हुआ है। शनिवार को भारी बारिश और मौसम के खराब मिजाज के कारण रामबन जिले के कई क्षेत्रों में यातायात बुरी तरह प्रभावित हुआ है। एनएच 44 पर भूस्खलन के कारण पत्थर गिरने लगे जिससे रास्ता

बाधित हुआ। भूस्खलन के कारण गंगरू, हिंगनी और शालगड़ी सुरंग क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। सुरंग क्षेत्रों के आसपास पत्थर गिरने और मिट्टी धंसने की घटनाएं भी सामने आई हैं। इसके अलावा मेहर के पास भूस्खलन होने से रास्ता बाधित हुआ है। प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से दोनों तरफ से यातायात को रोक दिया है। कई ट्रक और यात्री वाहन रास्ते में फंसे हुए हैं। हाईवे अथॉरिटी और प्रशासन मलबा हटाने के काम में जुटे हैं, लेकिन लगातार हो रही बारिश और गिरते पत्थरों के कारण काम में रुकावट आ रही है।

महाराष्ट्र के नासिक में हादसा, 9 की मौत

कुएं में गिरी कार,सभी एक ही परिवार के इनमें 6 बच्चे भी शामिल

नासिक (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नासिक जिले में एक कार के कुएं में गिरने से एक परिवार के छह बच्चों समेत 9 लोगों की मौत हो गई। हादसा शुक्रवार रात करीब 10 बजे डिंडोरी शहर के शिवाजी नगर इलाके में हुआ। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पीड़ित परिवार एक बैंक्वेट हॉल में फंक्शन में शामिल होने के बाद घर जा रहे थे, तभी उनकी कार वेन्यू के पास एक कुएं में गिर गई। लोग मौके पर पहुंचे और आधी रात को दो क्रेन और तैराकों की मदद से कार और उसमें सवार लोगों को बाहर निकाला। पुलिस के अनुसार, मरने वालों की पहचान सुनील दत्तू दरगुडे (32), उनकी पत्नी रेशमा, एक अन्य महिला आशा अनिल दरगुडे (32) और परिवार के छह बच्चों (पांच लड़कियां और एक लड़का) के रूप में हुई है। अधिकारी ने कहा कि वे यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि ड्राइवर को कुआं कैसे नहीं दिखा। उन्होंने आगे कहा, हम चश्मदीदों की तलाश कर रहे हैं और घटना के सीसीडीवी फुटेज चेक कर रहे हैं।

इजराइल का ईरान के पेट्रो केमिकल जोन पर हमला

एयर डिफेंस, मिसाइल साइट और परमाणु प्लांट बने निशाना

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। इजराइल ने शनिवार को ईरान के दक्षिणी खुजेस्तान प्रांत में स्थित महशहर पेट्रोकेमिकल स्पेशल इकोनॉमिक जोन पर हमला किया है। फार्स न्यूज एजेंसी के अनुसार, इस इलाके में कई विस्फोट हुए, जिसके बाद घटनास्थल से धुआं उठता हुआ देखा गया। इजराइल के सुरक्षा सूत्रों ने भी पुष्टि

की है कि ये हमले उसकी वायुसेना ने किए हैं। इस हमले में तीन कंपनियों को निशाना बनाया गया। रिपोर्ट के अनुसार, हमलों में पांच लोग घायल हुए हैं। वहीं, ईरान के दक्षिण-पश्चिम में स्थित बुशहर परमाणु प्लांट के पास एक प्रोजेक्टाइल गिरने की खबर सामने आई है, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई है। इजराइली सेना ने दावा किया है कि उसने शुक्रवार को ईरान के एयर डिफेंस साइट्स पर हमला किया। इसके अलावा, इजराइल ने हथियारों के रिसर्च और डेवलपमेंट से जुड़े एक सैन्य ठिकाने पर भी हमला किया है। तेहरान में एक म्यूजिक स्कूल भी हवाई हमले में पूरी तरह तबाह हो गया।

ईरान की नाक के नीचे भारत ने खोजा नया समुद्री रास्ता !

● होर्मुज स्ट्रेट के पास तीन जहाजों के साथ निकला भारतीय जहाज

तेहरान (एजेंसी)। होर्मुज स्ट्रेट से तीन अन्य जहाजों के साथ भारतीय जहाज भी बाहर निकल आया है। होर्मुज जलडमरूमध्य में कमर्शियल जहाजों के लिए एक नया रास्ता खुलता दिख रहा है। यह रास्ता न तो सामान्य रास्ते से गुजरता है और न ही उस रास्ते से जिसे हाल ही में ईरान ने बनाया था। बल्कि ऑटोमैटिक आइडेंटिफिकेशन सिस्टम और रिमोट सेंसिंग डेटा से पता चलता है कि तेल, एलपीजी और सामान्य सामान ले जाने वाले कम से कम चार बड़े जहाज इस नए रास्ते से गुजरे हैं। यह रास्ता अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र से बचते हुए ओमान की समुद्री सीमा के भीतर ही रहता है। यानि ये जहाज ओमान की

समुद्री सीमा के भीतर से गुजर रहे हैं और ईरान यहां हमले नहीं कर सकता है। अगर ईरान यहां हमले करता है तो ये समुद्री सीमा का उल्लंघन होगा। रिपोर्ट के मुताबिक दो बहुत बड़े क्रूड कैरियर मार्शल आइलैंड्स का झंडा लगे जहाज हबरुत और धलकुत, और साथ ही पनामा का झंडा लगा कैरियर सोहर, संयुक्त अरब अमीरात के शहर रास अल खैमाह के पास ओमान के समुद्री क्षेत्र में दाखिल हुए और मुसंदम प्रायद्वीप के पास अपने लोकेशन बताने वाले सिग्नल ट्रांसपोंडर बंद कर दिए। 3 अप्रैल को उन्हें मस्कट के तट से 350 किलोमीटर दूर देखा गया।

होर्मुज स्ट्रेट में ईरान ने बनाया 'टोल बूथ'

ईरान ने युद्ध शुरू होने के बाद होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले जहाजों पर हमला करना शुरू कर दिया। चूंकि वैश्विक ऊर्जा सप्लाई का 20 फीसदी इसी रास्ते से गुजरता है इसीलिए दुनियाभर में इसका असर हुआ है। ईरान ने बाद में जाकर होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों से टोल वसूलने शुरू कर दिए। ईरान ने इस जलमार्ग में जहाजों की आवाजाही को कंट्रोल करने के लिए एक नया और लंबा शिपिंग रूट बनाया है। यह रूट ईरान के समुद्री इलाके और केश्म और लारक द्वीपों के बीच के एक संकरे रास्ते से होकर गुजरता है। रिपोर्टों के मुताबिक ईरान हर जहाज को अलग-अलग आधार पर इस रास्ते से गुजरने की मंजूरी देता है और इन दोनों द्वीपों पर मौजूद अपने नौसैनिक अड्डों से जहाजों की पहचान करता है।

होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों ने खोजा नया समुद्री रास्ता

समुद्री विश्लेषण फर्म के मुताबिक धलकुत और हबरुत में 20 लाख बैरल सऊदी और अमीराती क्रूड तेल लदा हुआ था। सोहर 21 मार्च को यूएई के अल हमरिया बंदरगाह से रवाना हुआ था लेकिन यह साफ नहीं है कि उसमें कोई माल लदा था या नहीं। उसका स्टेटस आंशिक रूप से लदा हुआ दिखाया गया था। इन तीनों जहाजों के पीछे-पीछे भारत का झंडा लगा एक मालवाहक जहाज चल रहा था जिसके सिग्नल से उसकी पहचान 2183 के तौर पर हुई। यह जहाज 31 मार्च को दुबई से रवाना हुआ था और इसकी ताजा लोकेशन ओमान के डिब्बा बंदरगाह से लगभग 40 किमी दूर खुले समुद्र में दिखाई दी। यह साफ नहीं है कि जहाज माल से लदा हुआ था या नहीं।

वे बंगाल को टारगेट कर रहे हैं, हम दिल्ली को करेंगे

● मालदा में गरजीं ममता बनर्जी, अमित शाह को दे दी चुनौती

कहा-मोटा भाई तैयार रहें! 2026 में ही गिरेगी मोदी सरकार

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में अब जुबानी जंग शुरू हो गई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भबानीपुर पहुंचकर सुवेंदु अधिकारी का नामांकन दाखिल कराया था। गृह मंत्री अमित शाह ने रोड शो भी किया था। अब ममता बनर्जी ने केंद्रीय गृह मंत्री पर बड़ा हमला बोला है। मालदा हिंदा की एनआईए जांच के बीच रैली के लिए पहुंची ममता बनर्जी ने कहा कि 2026 में दिल्ली में बीजेपी सरकार का पतन होगा।

वे बंगाल को टारगेट कर रहे हैं, हम दिल्ली को टारगेट करेंगे। आगामी दिन मोटा भाई तैयार रहें। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 के लिए दो चरणों में वोट डाले जाएंगे। मतों की गितनी 4 मई को होगी। ममता बनर्जी ने इससे पहले मालदा में सात न्यायिक अधिकारियों को हिरासत में लिए जाने और फिर हिंसा होने पर एआईएमआईएम और सीपीएम के साथ बीजेपी को जिम्मेदार ठहराया था। ममता बनर्जी ने एक दिन पहले आरोप लगाया था कि यह बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की साजिश है। बीजेपी ने मालदा हिंसा के लिए ममता बनर्जी को घेर रही है। इस पूरे मामले की जांच चुनाव आयोग एनआईए को सौंपी है। पश्चिम बंगाल चुनावों में पहले चरण में 152 सीटों के लिए वोट डाले जाएंगे।

मुख्यमंत्री की सादगी ने जीता वाराणसी के लोगों का दिल

श्रीराम भंडार पर स्थानीय व्यंजन का चखा स्वाद, दुकानदार और जनता से किया संवाद

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार सुबह वाराणसी के श्रीराम भंडार में स्थानीय व्यंजनों का आनंद लिया। उनकी सादगी ने लोगों का दिल जीत लिया। उन्हें अपने बीच पाकर स्थानीय लोगों को यकीन ही नहीं हुआ। लोग उनसे मिलकर उत्साहित हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की सादगी देख

प्रभावित हुए और मुक्त कंठ से प्रशंसा की। शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ. यादव का काफिला जब एयरपोर्ट की ओर जा रहा था, तभी वे मिंट हाउस स्थित श्रीराम भंडार पर अचानक रुक गए। यहां उन्होंने बनारस की मशहूर कचौड़ी, पूरी-राम भाजी ,जलेबी और लस्सी का स्वाद चखा।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत के हर प्रांत और शहर की अपनी विशिष्ट खान-पान की शैली होती है , जो वहां की पहचान होती है। स्थानीय स्वाद और पारंपरिक व्यंजन हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

हिंदू पत्नी की बहन को बेटी मानकर पाला, अब करेंगे कन्यादान

● एमपी के राजगढ़ के अब्दुल हक खान ने अपनी साली को माना बेटी ● माता-पिता के निधन के बाद जीजा ने पाला, खास है शादी का कार्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के राजगढ़ में मुस्लिम पिता अब्दुल हक खान अपनी हिंदू बेटी नंदिनी सिमोलिया का कन्यादान करेंगे। राजगढ़ के ओल्ड कलेक्ट्रेट रोड स्थित पुरानी बस स्टैंड के पास रहने वाले अब्दुल हक खान बताते हैं कि यूं तो नंदिनी उनकी साली है, मगर उन्होंने उसे बेटी मानकर पाला है। दरअसल, नंदिनी के पिता रतिराम की साल 2010 में सड़क हादसे में मौत हो गई थी।

इसके बाद साल 2012 में मां फूलवती का भी निधन हो गया। माता-पिता के गुजर जाने के बाद नंदिनी की बड़ी बहन प्रीति (आयशा) ने अब्दुल हक खान से लव मैरिज की और नंदिनी को अपने साथ ससुराल ले आई। तभी से नंदिनी इसी परिवार में पली-बढ़ी और पढ़ाई की।

शादी में दोनों धर्मों के लोग जुटेंगे

अब नंदिनी की शादी 4 अप्रैल 2026 को ग्वालियर के अंश परमार के जिंदाबाद हाउस में धूमधाम से होगी। इस दौरान दोनों धर्मों के करीब 1500 से 2000 लोगों के भोजन की व्यवस्था की जा रही है। अब्दुल हक खान ने कहा कि नंदिनी से उनका भले ही खून का रिश्ता ना हो लेकिन प्यार, जिम्मेदारी और अपनापन से उन्होंने इस रिश्ते को अपना बनाया।

4 मंजिला लॉज गिरी, 1 की मौत, मलबे में दब गए थे लोग

अनूपपुर एसपी बोले- कई लोग ठहरे हुए थे; बगल में चल रहा था कंस्ट्रक्शन

अनूपपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले के कोतमा बस स्टैंड के पास 4 मंजिला अग्रवाल लॉज अचानक गिरी। 1 की मौत हो गई है। मलबे में कई मजदूर और लोगों के दबे होने की आशंका है। लॉज के गिरने से आसपास की कई दुकानों को भी नुकसान पहुंचा है। जानकारी के अनुसार, हादसा शनिवार की शाम लगभग 5:30 बजे हुआ। स्थानीय अधिकारी और पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई है। रेस्क्यू जारी है। मलबे में कितने मजदूर और लोग दबे हैं, इसकी पूरी जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

लॉज में कई लोग ठहरे हुए थे-एसपी मोती उर रहमान ने बताया कि बिल्डिंग लगभग 10 साल पुरानी है। लॉज के बगल में निर्माण कार्य चल रहा था। लॉज में कई लोग ठहरे हुए थे। अचानक भरभरा कर गिरने से लॉज में मौजूद लोग और मजदूर दब गए।

कमलनाथ, आनंद शर्मा और थरूर का सरकार को समर्थन

कांग्रेस नेताओं ने कहा-मिडिल ईस्ट संकट को अच्छे से संभाला,राहुल से अलग राय

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के 3 बड़े नेताओं ने मिडिल ईस्ट जंग और एलपीजी संकट पर पार्टी लाइन से हटकर बात की। इनमें कमलनाथ, आनंद शर्मा और शशि थरूर शामिल हैं। उधर, राहुल गांधी इन मुद्दों पर सीधे प्रधानमंत्री का नाम लेकर निशाना साध रहे हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने भारत के डिप्लोमैटिक तरीके की तारीफ करते हुए इसे मैच्योर और स्किलफुल बताया। वहीं मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने गैस संकट पर कहा था कि ऐसी कोई कमी नहीं है। यह बस माहौल बनाया जा रहा है। आनंद शर्मा ने लिखा, संकट से निपटने में भारत का डिप्लोमैटिक तरीका समझदारी भरा रहा है।

कमलनाथ बोले-

- **गैस की कहीं पर कोई कमी नहीं**- एलपीजी की कमी की कई रिपोर्टों के सामने आने पर कमलनाथ ने गुरुवार को एमपी के छिंदवाड़ा में कहा, ऐसी कोई कमी नहीं है। यह बस एक माहौल बनाया जा रहा है कि कमी है। कमलनाथ ने कुछ लोगों पर राजनीतिक फायदे के लिए जानबूझकर पैनिक पैदा करने का आरोप लगाया। हालांकि इस बयान पर मंत्री सिंधिया ने भी रिएक्शन दिया है।

पाक -अफगान के बीच 'चौधरी' बन रहा चीन

● भारत के प्रभाव को खत्म करने की चाल चल रहा ड्रैगन

नई दिल्ली (एजेंसी)। मिडिल ईस्ट संकट का असर पूरी दुनिया में दिख रहा। जिस तरह से ईरान के साथ अमेरिका और इजरायल की जंग चल रही उससे कई देश गंभीर ऊर्जा संकट झेल रहे। खास तौर से होर्मुज स्ट्रेट में तेल और गैस के जहाज अटके हुए हैं। हर किसी को इस बात का इंतजार है कि आखिर ये युद्ध कब खत्म होगा। उधर भारत के पड़ोस में भी दो मुल्क आमने-सामने हैं। जी हां, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में सैन्य टकराव हाल के दिनों में काफी बढ़ चुका है। इसका असर दिल्ली समेत समूचे एशियाई क्षेत्र में नजर आ रहा। यही वजह है कि अब दोनों ही पड़ोसी मुल्कों के बीच टकराव को खत्म करने के लिए चीन 'चौधरी' बनता दिख रहा है। जानकारों के मुताबिक, भारत के प्रभाव को खत्म करने के लिए ड्रैगन ये दांव चल रहा है।

केरल में कोई छिपा हुआ हाथ एलडीएफ को चला रहा है

● राहुल गांधी ने बीजेपी, संघ और लेफ्ट पर गठजोड़ का लगाया आरोप

तिरुवनन्तपुरम (एजेंसी)। केरल विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर लेफ्ट और बीजेपी पर निशाना साधा है। राहुल गांधी ने शनिवार को आरोप लगाया कि सीएम पिनराई विजयन उन लोगों के साथ मिले हुए हैं, जो देश के अन्य हिस्सों में अल्पसंख्यकों पर हमले करते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ ने पहले एलडीएफ का मुकाबला एक वैचारिक विरोधी के तौर पर किया था, लेकिन उन्होंने दावा किया कि अब यह मोर्चा बदल गया है। उन्होंने कहा कि एलडीएफ का मतलब क्या है लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट। उन्होंने कहा कि अब सच कहूं तो, एलडीएफ में लेफ्ट जैसा कुछ भी नहीं बचा है। उन्होंने कहा कि चुनाव के बाद तो इसमें और भी कुछ बाकी नहीं

बचेगा। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कोई 'छिपा हुआ हाथ' एलडीएफ को चला रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि वह छिपा हुआ हाथ सांप्रदायिक है, भारत के संविधान को नहीं मानता, लोगों को बांटता है।

राहुल गांधी ने पीएम मोदी पर भी बोला हमला

राहुल गांधी ने पीएम की भी आलोचना की। उन्होंने कहा कि वे दूसरे राज्यों में धर्म और मंदिरों की बात करते हैं, लेकिन केरल के मुद्दों पर चुप रहते हैं। उनका इशारा सबरीमाला गोल्ड केस की तरफ था। उन्होंने पूछा कि मैं बीजेपी और आरएसएस से लड़ता हूं। वे मुझ पर हमले करते हैं, मुझ पर केस दर्ज होते हैं, मुझसे पूछताछ होती है, लेकिन मैं पीछे नहीं हटता। राहुल गांधी ने कहा कि मोदी रोज मुझ पर हमला करते हैं लेकिन वे केरल के मुख्यमंत्री और उनके परिवार पर हमला क्यों नहीं करते। राहुल गांधी ने आगे कहा कि जब वे केरल आते हैं, तो वे यह सब भूल जाते हैं, क्योंकि वे एलडीएफ की मदद करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि सच तो यह है कि वे जानते हैं कि एलडीएफ उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर कभी चुनौती नहीं देगी।

राहुल गांधी ने ननों पर हुए हमले का किया जिक्र

राहुल ने देश के अलग-अलग हिस्सों में अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों को लेकर भी चिंता जताई। उन्होंने आरोप लगाया कि यहां की दो ननों पर छत्तीसगढ़ में हमला किया गया। मणिपुर में चर्च जलाए गए। मुख्यमंत्री की उन लोगों के साथ साझीदारी है, जो ये सब कर रहे हैं। जो लोग हमला कर रहे हैं, उन्हीं लोगों के साथ मुख्यमंत्री की साझीदारी है।

ईरान ने मार गिराए एफ-15 और ए-10 फाइटर जेट

● 23 साल बाद टूटा दुनिया के 'सुपर पॉवर' अमेरिका का घमंड

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान ने अमेरिका के दो फाइटर जेट एफ-15 और ए-10 को मार गिराया है। यह हमला अमेरिका के लिए अत्यंत दुर्लभ हमला है, जो पिछले 23 से अधिक सालों में नहीं हुआ है। यह हमला ट्रंप के उस दावे को खारिज करता है, जिसमें उन्होंने कहा था कि ईरान की सेनाएं पूरी तरह तबाह हो चुकी हैं। दरअसल, इस सप्ताह की शुरुआत में अमेरिका राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा था कि ईरान की मिसाइल और ड्रोन लॉन्च करने की क्षमता में भारी कमी आई है। ट्रंप के दावे के बाद ईरान की यह बड़ी कार्रवाई क्षमता को उजागर करती है।

अंबेडकर महाकुंभ की तैयारियां

महू। डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती पर हर वर्ष आयोजित होने वाला भव्य 'अंबेडकर महाकुंभ' इस बार भी महू की पावन जन्मस्थली पर 14 अप्रैल को आयोजित होगा। आयोजन को लेकर तैयारियां तेज हो गई है और प्रशासन ने व्यापक स्तर पर व्यवस्थाएं शुरू कर दी हैं। इस महाकुंभ में महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश सहित देशभर से लाखों अनुयायी महू पहुंचते हैं। श्रद्धालुओं के ठहरने, भोजन और अन्य सुविधाओं के लिए सरकार द्वारा विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं। महू की विधायक उषा ठाकुर ने बताया कि इस वर्ष भी आयोजन को भव्य रूप देने के लिए सभी तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई हैं। आने वाले प्रत्येक अनुयायी का स्वागत किया जाएगा। अंबेडकर जन्मभूमि परिसर में स्थित संगमरमर का स्मारक पंचतीर्थों में शामिल है, जहां सांस्कृतिक कार्यक्रम, श्रद्धांजलि सभा और विभिन्न आयोजन होंगे। यह महाकुंभ सामाजिक समरसता और प्रेरणा का बड़ा केंद्र बनता जा रहा है।

इंदौर से हवाई यात्रा का किराया बढ़ा

इंदौर। युद्ध के कारण पैदा हुए ईंधन संकट के बीच इंदौर से जानी वाली उड़ानों का किराया बढ़ने लगा है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद सहित अन्य रूटों पर किराये में बढ़ोतरी हुई है। अप्रैल में सबसे ज्यादा फेयर कोलकाता रूट का है जो 6500 से 12 हजार रुपए तक पहुंच गया है। पहले यह 6500 से 7500 रुपए तक था। दरअसल, इंडिगो ने एटीएफ महंगा होने से ईंधन शुल्क बढ़ा दिया है। इंदौर में अधिकांश फ्लाइटें इंडिगो की ही हैं, ऐसे में असर अधिक है। इंदौर-शारजाह फ्लाइट कब से शुरू, तय नहीं वहीं, इंदौर-शारजाह फ्लाइट का संचालन कब से होगा यह तय नहीं है। कंपनी तारीख बढ़ाती जा रही है।

नशे का आदी बनाने वाले पर रासुका

इंदौर। बाहरी जिलों, राज्यों से नशीला पदार्थ लाकर युवकों को बेचने वाले बदमाशों की पुलिस लगातार धरपकड़ कर रही है। इसी क्रम में खजराना पुलिस ने आरोपी सैयद रेहान उर्फ मांडा पिता सैयद लुकमान निवासी ममता कालोनी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पहले भी दो बार मादक पदार्थ बिक्री के मामले में पकड़ा जा चुका है। आरोपी को छह माह के लिए रासुका में गिरफ्तार कर भोपाल जेल भेज दिया है। इसी प्रकार, संयोगितागंज पुलिस ने कृषि कॉलेज के पास से तस्कर अभिमन्यु उर्फ मन्ना पिता राजेन्द्र खरे निवासी बड़ी ग्वालटोली को गिरफ्तार किया है। उसके पास से 13 ग्राम ब्राउन शुगर जब्त की है।

उधारी नहीं चुकाई तो चाकू मारा

इंदौर। चंदन नगर थाना क्षेत्र में युवक ने उधारी के पैसे नहीं चुकाए तो उस पर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। मामले में पुलिस ने बदमाश को सबक सिखाते हुए उसका जुलूस निकाला। पुलिस के मुताबिक, 2 अप्रैल को जिला अस्पताल से सूचना मिली थी कि युवक चाकू के हमले में घायल होकर उपचार के लिए पहुंचा है। इस पर पुलिस टीम तत्काल अस्पताल पहुंची और घायल मोहम्मद फैजान (21) निवासी केशव नगर से पूछताछ की। फैजान ने बताया कि तनवीर कुरैशी उर्फ तन्नु मंजरा से उसका उधारी को लेकर विवाद चल रहा था। इसी बात पर आरोपी ने हमला कर दिया। घटना के बाद पुलिस ने चंद घंटों में ही आरोपी को पकड़ लिया। इसके बाद रहवासियों के सामने उसने कान पकड़कर माफी मांगी और उठक-बैठक लगाते हुए भविष्य में इस तरह का अपराध नहीं करने की शपथ भी ली। आरोपी ने पूछताछ में बताया कि तनवीर और फैजान दोस्त होकर प्राइवेट नौकरी करते हैं। पिछले दिनों फैजान ने 2 हजार रुपए उधार लिए थे। इसी पैसे को तनवीर मांग रहा था। उस पर पहले भी हत्या के प्रयास और मारपीट के मामले दर्ज हैं।

पाक्सो एक्ट का आरोपी दोषमुक्त

इंदौर। पाक्सो एक्ट के आरोपी को जिला न्यायालय ने साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त कर दिया है। पिछले साल पीड़िता ने आरोप लगाया था कि आरोपी ने उसे घर बुलाया और झांसा देकर दुष्कर्म कर लिया। परिणाम स्वरूप पीड़िता गर्भवती हो गई और उसने बेटे को जन्म दिया। बच्चा कमजोर होने से उसकी कुछ दिन बाद मृत्यु हो गई थी। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। अधिवक्ता जितेंद्र अग्रवाल ने कोर्ट में तर्क रखे कि पीड़िता के बयान में कई विसंगतिया हैं। पीड़िता एवं उसकी मां का बयान एफआईआर और पुलिस जांच से अलग थे। इस पर कोर्ट ने कहा कि पीड़िता और गवाहों के बयानो में विरोधाभास है। इसलिए आरोपी को दोषमुक्त किया जाता है।

शराब दुकान पर मारपीट, एक घायल

इंदौर। राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र के अहिरखेड़ी स्थित शराब दुकान पर मामूली लेनदेन का विवाद हिंसक हो गया। 100 और 200 रुपये के नोट को लेकर शुरू हुआ झगड़ा इतना बढ़ा कि दुकान कर्मचारी ने एक युवक पर डंडे से हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। पुलिस के मुताबिक, फरियादी केशरसिंह सोलंकी ने शिकायत दर्ज कराई है कि वह अपने भतीजे दीपक के साथ शराब लेने दुकान पहुंचे थे। उन्होंने 200 रुपये का नोट दिया, लेकिन कर्मचारी ने 100 रुपये मिलने की बात कही, जिससे विवाद शुरू हो गया। बहस के दौरान आरोपी ने गाली-गलौज करते हुए पास पड़ा लकड़ी का डंडा उठाया और दीपक पर वार कर दिया, जिससे वह घायल हो गया। आसपास के लोगों ने बीच-बचाव किया। पुलिस ने अज्ञात कर्मचारी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नशे में हंगामा, युवक से मारपीट

इंदौर। विजयनगर थाना क्षेत्र में देर रात एक युवक ने नशे की हालत में जमकर उत्पात मचाया। भमोरी स्थित इंस्टामार्ट स्टोर के बाहर ऑर्डर का इंतजार कर रहे युवक के साथ आरोपी ने पहले गाली-गलौज की और फिर विरोध करने पर मारपीट कर दी। पुलिस के मुताबिक, फरियादी संजीव सिंह लोधी ने शिकायत दर्ज कराई है कि वह रात करीब 1 बजे स्टोर के बाहर खड़ा था। तभी राहुल कोष्ठी नामक युवक वहां पहुंचा और उससे मोबाइल पर व्हाट्सएप अपडेट करने की जिद करने लगा। मना करने पर आरोपी ने गालियां देना शुरू कर दिया। शोर सुनकर पहुंचे कर्मचारियों से भी उसने अभद्रता की। बाद में आरोपी ने संजीव के साथ लात-घूंसों से मारपीट कर दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हनी ट्रैप गिरोह का भंडाफोड़, सोशल मीडिया से फंसाकर ब्लैकमेल किया

दो महिलाओं सहित तीन गिरफ्तार, अभी एक की तलाश जारी

इंदौर। महू क्षेत्र के बड़गोंदा थाना इलाके में पुलिस ने हनी ट्रैप और ब्लैकमेल करने वाले एक संगठित गिरोह का पर्दाफाश किया है। इस कार्रवाई में दो महिलाओं और एक युवक को गिरफ्तार किया गया। जबकि, एक अन्य महिला आरोपी फरार बताई जा रही है। मामले का खुलासा एक रिटायर्ड फौजी की शिकायत के बाद हुआ। पीड़ित दीपक, जो भारतीय सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद महू में निजी काम कर रहे हैं, ने पुलिस को बताया कि उनके मोबाइल पर एक महिला का मैसेज आया था। महिला ने खुद को परिचित बताते हुए बातचीत शुरू की और धीरे-धीरे उनसे नजदीकियां बढ़ाईं। कुछ दिनों बाद मिलने के लिए एक लोकेशन भेजी। जब दीपक वहां पहुंचे, तो महिला उन्हें बहाने से बड़गोंदा क्षेत्र के एक रिसॉर्ट में ले गई।

इंदौर से ऑपरेट होता गिरोह

पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि इस गिरोह का संचालन इंदौर निवासी भावना भार्गव अपने साथियों साधना और विजय के साथ मिलकर कर रही थी। ये लोग खासतौर पर नौकरीपेशा लोगों और व्यापारियों को निशाना बनाते थे। इस गिरोह ने एक अन्य मामले में महू के एक पूर्व सैन्यकर्मी को भी फंसाने की कोशिश की थी। भावना ने उसे बातों में उलझाकर बेरछा रोड स्थित एक फार्म हाउस पर बुलाया, जहां पहले से मौजूद उसके साथियों ने अचानक कमरे में घुसकर खुद को रिश्तेदार बताया और झूठे आरोप लगाने लगे। इसके बाद पुलिस केस की धमकी देकर 2 लाख रुपये की मांग की गई। हालांकि, फार्म हाउस कर्मचारियों की सतर्कता से पुलिस मौके पर पहुंच गई और साजिश नाकाम हो गई।

रिसोर्ट में बुलाकर फसाया

रिसॉर्ट के कमरे में पहुंचने के कुछ देर बाद एक दूसरी महिला और एक युवक वहां आ गए। इसके बाद तीनों ने मिलकर दीपक को डराना-धमकाना शुरू कर दिया। आरोपियों ने झूठे महिला संबंधी केस में फंसाने और जेल भिजवाने की धमकी दी। भय के चलते दीपक ने उन्हें बड़ी रकम दे दी। घटना के बाद दीपक ने हिम्मत जुटाकर बड़गोंदा थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और जल्द ही तीनों आरोपियों को पकड़ लिया। जांच में सामने आया कि गिरोह बेहद योजनाबद्ध तरीके से वारदात करता था। पहले सोशल मीडिया या फोन के जरिए लोगों से संपर्क किया जाता, फिर उन्हें सुनसान जगह, रिसॉर्ट या फार्म हाउस पर बुलाकर ब्लैकमेल किया जाता था।

कई को शिकार बनाया

जांच के दौरान एक और युवक सामने आया है, जिसने आरोप लगाया कि उसके साथ भी इसी तरह की वारदात हुई थी। पुलिस को शक है कि यह गिरोह पहले भी कई लोगों को अपना शिकार बना चुका है, लेकिन बदनामी के डर से अधिकतर लोग सामने नहीं आते। पुलिस ने उस रिसॉर्ट और फार्म हाउस संचालक के खिलाफ भी कार्रवाई की है, जहां बिना आईडी और उचित दस्तावेज के लोगों को ठहराया जा रहा था और संदिग्ध गतिविधियां चल रही थीं। फिलहाल गिरफ्तार आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया है, जबकि फरार आरोपी की तलाश जारी है।

इंदौर के देवास नाका चौराहे पर स्थापित होने वाली सम्राट पृथ्वीराज चौहान की प्रतिमा के इंदौर पहुंचने पर समाज में हर्ष का माहौल बन गया। ग्वालियर में निर्मित यह 14 फीट ऊंची अष्टधातु प्रतिमा मध्यप्रदेश में अपनी तरह की पहली विशाल प्रतिमा बताई जा रही है। देवास नाका पर बनने वाले ब्रिज का नाम भी पृथ्वीराज चौहान के नाम पर रखने की मांग की गई।

पुलिस ने फार्म हाउस से अवैध पिस्टल व कारतूस जब्त किए

दिल्ली का आरोपी गिरफ्तार, संचालक पर कार्रवाई

इंदौर। पुलिस ने खुडैल थाना क्षेत्र में देर रात कार्रवाई करते हुए एक फार्म हाउस पर छापा मारकर अवैध हथियार के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से पिस्टल और जिंदा कारतूस बरामद किए गए। डीएसपी उमाकांत चौधरी के मुताबिक 3 अप्रैल की रात ग्राम गढ़ी स्थित अनुभूति फार्म हाउस में संदिग्ध गतिविधियां की जानकारी मिली थी। इस पर पुलिस टीम रात करीब 1.15 बजे मौके पर पहुंची तलाशी शुरू की। यहां जांच में सामने आया कि फार्म हाउस की संचालक अर्चना सिंह द्वारा वहां ठहरे लोगों की सूचना थाने में नहीं दी गई थी। साथ ही आने-जाने वाले व्यक्तियों की एंट्री के लिए कोई विजिटिंग रजिस्टर भी नहीं रखा गया था। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने आरोपी सुरजभान सिंह (38) पुत्र प्रेमपाल सिंह राघव राजपुत निवासी किराडी सुलेमान नगर थाना अमन विहार दिल्ली को पकड़ा। उसकी स्कॉर्पियो कार (डीएल 4सी/बीडी /3562) की तलाशी ली। इसमें से एक अवैध पिस्टल और दो जिंदा राउंड बरामद किए गए। सूरजभान फार्म हाउस में शराब भी मिली। इस मामले में फार्म हाउस संचालक अर्चना सिंह पर भी नियमों के उल्लंघन को लेकर कार्रवाई की गई है।

टीआई को क्लीनचिट मिली, महिला का वीडियो कॉल का आरोप झूठा

दबाव बनाने के लिए कॉल करने की बात झूठी होना बताया

इंदौर। दुष्कर्म पीड़ित महिला ने जनसुनवाई में एमजी रोड थाना प्रभारी विजयसिंह सिसौदिया पर वीडियो कॉल करने का आरोप लगाया था। मामले की जांच महिला एसीपी को सौंपी गई थी। जांच में वीडियो काल करने जैसी बात सामने नहीं आने पर टीआई को क्लीनचिट मिल गई। इंदौर में रहने वाले आरक्षक ने उसके साथ दुष्कर्म किया था। मामले में महिला ने थाने पर शिकायत की थी। शिकायत के बाद पुलिस ने नीमच में पदस्थ आरक्षक पर केस दर्ज किया था। महिला पुलिस की जांच से संतुष्ट नहीं थी। उसने आरक्षक पर दोबारा कार्रवाई करने सीएम हेल्पलाइन में शिकायत की थी। सीएम हेल्पलाइन से टीआई को कार्रवाई के आदेश हुआ। चूंकि, आरक्षक की कोर्ट से जमानत हो चुकी थी, इसलिए दोबारा उस पर कार्रवाई करना संभव नहीं था। टीआई ने इसी बिंदु की जानकारी देने महिला को एक बार रात 8.30 बजे वीडियो कॉल किया था।

दबाव बनाने की थी शिकायत

टीआई द्वारा कार्रवाई नहीं करने की बात से महिला नाराज था। थाना प्रभारी पर कार्रवाई का दबाव बनाने के लिए उसने जनसुनवाई में शिकायत की थी। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (जोन तीन) रामस्नेही मिश्रा ने बताया कि टीआई और महिला के मोबाइल की डिटेल खंगाली गई। आडियो भी चेक किए गए। दोनों के मोबाइल में केवल एक बार बात होना सामने आया। जांच के दौरान महिला ने भी दबाव बनाने के लिए कॉल करने की बात झूठी होना बताया था।

महंगाई की मार की वजह से नाश्ते से लेकर स्ट्रीट फूड तक की कीमतों में उछाल आया

ग्राहकों की जेब पर सीधा असर आया, कच्चे माल के भाव में भी बढ़ौतरी

इंदौर। अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच जारी तनाव का असर अब इंदौर में भी दिखाई देने लगा। एलपीजी की कमी और पीएनजी की बढ़ी हुई दरों ने आम लोगों के खाने-पीने का खर्च बढ़ा दिया है। इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और रीवा जैसे शहरों में रोजमर्रा की चीजों से लेकर स्ट्रीट फूड तक महंगा हो गया। शहर के प्रमुख फूड हब '56 दुकान' और सराफा बाजार में खाने-पीने की चीजों के दाम 1 से 10 रूपए तक बढ़ गए। पोहा, चाय, समोसा, कचौरी और चाइनीज फूड जैसी आम चीजें अब पहले से ज्यादा महंगी मिल रही हैं। कीमतें बढ़ने के कारण इन इलाकों में ग्राहकों की संख्या में कमी देखी जा रही। इंदौर में पहले दो लोगों के खाने का खर्च 400 से 500 रूपए के बीच होता था, जो अब बढ़कर 700 से 800 तक पहुंच गया। इसका सबसे ज्यादा असर मध्यमवर्गीय परिवारों पर पड़ा है। जहां लोग पहले हफ्ते में दो-तीन बार बाहर खाना खाते थे, अब यह संख्या घटकर एक बार या उससे भी कम रह गई है।

कच्चे माल के दाम भी बढे - 56 दुकान स्थित चाट हाउस के संचालक मृदुल ठाकर का कहना है कि कच्चे माल के दाम बढ़ने के कारण उन्हें खाने की चीजों के दाम 1 से 3 तक बढ़ाने पड़े हैं। सभी वस्तुओं की कीमत बढ़ने से 5त्न से 7त्न तक बढ़ोतरी करनी पड़ी है। स्ट्रीट फूड की कीमतों में भी साफ बढ़ोतरी देखी जा रही है। पानीपुरी, जो पहले 30 की प्लेट मिलती थी, अब 40 रूपए में मिल रही है। हॉट डॉग की कीमत 30 से बढ़कर 35 हो गई है। रेस्टोरेंट संचालकों का कहना है कि कच्चे माल की लागत में 20त्न-25त्न तक इजाफा हुआ है। मूंगफली तेल का डिब्बा 2600 रू से बढ़कर 3100-3200 रू तक पहुंच गया, जिससे नाश्ते के दाम 5 रू तक बढ़ाने पड़े हैं।

खान-पान की हर चीज महंगी

दाल, तेल, मसाले और गैस सभी महंगे हो गए हैं। हालांकि, वे पूरी तरह कीमत बढ़ाने से बचने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं एक होटल संचालक ने कहा कि गैस सिलेंडर की कमी के कारण परेशानी और बढ़ गई है। पुरानी बुकिंग पर कीमत नहीं बढ़ाई जा सकती, लेकिन नई बुकिंग बढ़े हुए दामों पर ही हो रही है। एमजी रोड पर चाय बेचने वाले के अनुसार, पहले 10 रू में मिलने वाली चाय अब 14 रू की हो गई है। उनका कहना है कि गैस सिलेंडर महंगा मिलने के कारण कीमत बढ़ाना जरूरी हो गया।

ड्राइवर की हत्या के आरोपी उद्योगपति बरी, सबूत नहीं मिला, गवाह भी मुकरे

गवाहों के मुकरने पर कोर्ट संदेह, पुलिस को जांच के आदेश दिए

इंदौर। ड्राइवर के अपहरण और हत्या के मामले में अदालत ने फैसला सुना दिया। अपर सत्र न्यायाधीश भारतकुमार व्यास की कोर्ट ने उद्योगपति हेमंत नीमा, उनके पुत्र पीयूष नीमा समेत सभी 12 आरोपियों को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया। लंबी सुनवाई के बाद अदालत ने साक्ष्यों को अपर्याप्त माना और सभी आरोपियों को दोषमुक्त कर दिया। अदालत ने एसपी इंदौर को निर्देश दिए हैं कि गवाहों के पलटने की वजह की जांच की जाए। कोर्ट ने एएसआई भागीरथ जाट, तहसीलदार रितेश जोशी, डॉ संजय वाधवानी, डॉ नीरज गुप्ता और डॉ जिनेन्द्र कुमार सेठिया की भूमिका की भी जांच के आदेश दिए

हैं। यह पता लगाया जाएगा कि गवाह स्वाभाविक रूप से मुकरे या किसी दबाव या लाभ के चलते उन्होंने न्याय प्रक्रिया में सहयोग नहीं किया। बरी किए गए अन्य आरोपियों में जगदीश, रितेश, राहुल, हरीश, सुरेंद्र सिंह, शेखर, लोकेश, मोहन, व्यापक और कुणाल शामिल हैं। बचाव पक्ष की ओर से सीनियर एडवोकेट अविनाश सिरपुरकर और उदयप्रताप सिंह ने पैरवी की। कोर्ट ने मामले में गवाहों के होस्टाइल होने पर गंभीर टिप्पणी की।

ड्राइवर की 5 साल पहले हुई हत्या

यह घटना 10 मार्च 2020 की है। महाराष्ट्र के धारफुले निवासी प्रमोद मतकर की हत्या कर शव सिमरोल क्षेत्र के भेरूघाट जंगल में फेंक दिया गया था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हत्या की पुष्टि हुई थी और शरीर पर मारपीट के निशान मिले थे। पुलिस जांच में सामने आया था कि प्रमोद मतकर पहले नीमा परिवार के यहां ड्राइवर था। आरोप था कि विवाद के बाद उसका अपहरण कर एक बंगले में ले जाकर क्रिकेट बैट से पीट-पीटकर हत्या की गई और शव जंगल में फेंक दिया था।

दो सूने फ्लैटों में लाखों की चोरी

इंदौर। तेजाजी नगर क्षेत्र में चोरों ने सूने फ्लैट का ताला तोड़कर लाखों रुपए के जेवर और नकदी पर हाथ साफ कर दिया। यह वारदात गंगा विहार कॉलोनी स्थित श्रद्धा सबुरी अपार्टमेंट में हुई। फरियादी रोहित सोनी ने पुलिस को बताया कि 28 मार्च को अज्ञात बदमाश फ्लैट में घुसे और सीधे अलमारी को निशाना बनाया। चोर सोने की अंगूठियां, चेन, हार, झुमके, टॉप्स और नकदी लेकर फरार हो गए। मामले में टीआई देवेंद्र मरकाम के अनुसार पुलिस ने संदिग्धों से पूछताछ शुरू कर दी है। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं। साथ ही आसपास झोपड़ियों में रहने वाले मजदूरों से भी पूछताछ की गई है। इसी तरह गांधीनगर थाना क्षेत्र की कल्याण संपत विहार कॉलोनी में भी चोरी की एक और घटना सामने आई है। यहां शुभम लोधा के घर से सोने-चांदी के आभूषण और अन्य कीमती सामान चोरी हो गया। दोनों ही मामलों में पुलिस जांच जारी है और आरोपियों की तलाश की जा रही है।

लोगों के घरों से 30 सिलेंडर लेकर एजेंसी कर्मचारी फरार, केस दर्ज

- गैस की किल्लत के बीच नए ढंग से वारदात करके फरार हुआ

इंदौर। बाणगंगा क्षेत्र से ठगी का अनोखा मामला सामने आया है। एक गैस एजेंसी से जुड़ा कर्मचारी करीब 30 घरों से खाली सिलेंडर लेकर फरार हो गया। आरोप है कि उसने ये सिलेंडर ब्लैक में बेच दिए। मामले में एजेंसी संचालक की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी। पुलिस को की गई रिपोर्ट के मुताबिक वल्लभ नगर निवासी संतोष मिश्रा ने शिकायत दर्ज कराई है। उनका गैस पाइंट नाम से गोदाम है, जहां मुकेश सोनोने पिछले 15 साल से काम कर रहा था। आरोप है कि मुकेश घर-घर जाकर ग्राहकों को भरोसे में लेता था और कहता था कि उनका नंबर आ गया है, वह जल्द भरा सिलेंडर दे देगा। इस बहाने उसने करीब 30 ग्राहकों से खाली टंकियां ले ली।

ऐसे हुआ खुलासा

एक अप्रैल को मुकेश गैस उपभोक्ताओं के यहां पहुंचा। उन्हें कहा कि तुम्हारी बुकिंग का नंबर आ गया है, टंकी डिलीवरी करना है। खाली टंकी देने पर मैं भरा हुआ सिलेंडर लेकर आ जाऊंगा। मुकेश पर भरोसा कर 30 उपभोक्ताओं ने टंकी दे दी। जब मुकेश 2 अप्रैल की शाम तक भरा हुआ सिलेंडर नहीं पहुंचा, तो उपभोक्ताओं ने एजेंसी आफिस पर शिकायत की। तब जाकर सिलेंडर ले जाने का पता चला। जब एजेंसी संचालक ने मुकेश से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उसका मोबाइल बंद मिला। घर पर भी वह नहीं मिला। बताया जा रहा है कि 22 मार्च से ही वह एजेंसी पर आना बंद कर चुका था। मामले में पुलिस ने मुकेश के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। बाणगंगा थाना प्रभारी सियाराम गुर्जर ने बताया कि एजेंसी मालिक ने कर्मचारी द्वारा लोगों की टंकी ले जाने की शिकायत की है। आरोपी की तलाश में टीम रवाना की गई। जबकि, खाद्य नियंत्रक मोहनलाल मारू ने जानकारी दी कि एजेंसी मालिक की जिम्मेदारी है कि वह ऐसे युवकों को नौकरी पर नहीं रखे। ब्लैक में सिलेंडर बेचने वालों पर बिना दबाव प्रभाव कार्रवाई कर रहे हैं।

ब्लैक में सिलेंडर बेचे

शिकायत में आरोप है कि आरोपी ने एजेंसी से जुड़े सिलेंडरों को अन्य लोगों को ब्लैक में बेच दिया। करीब 30 पीड़ितों से जानकारी जुटाने के बाद एजेंसी संचालक ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। गैस नहीं मिलने पर कुछ दिन पहले पीड़ित ग्राहक एजेंसी के गोदाम पहुंचे और हंगामा किया। इसके बाद एजेंसी ने अपने ही कर्मचारी के खिलाफ केस दर्ज कराया। पुलिस ने गुरुवार को आरोपी मुकेश सोनोने के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

व्यंग्य

सुरेश रायकवार
लेखक व्यंग्यकार हैं।

कबीरा आप ठगाइए

देश में इतने प्रकार की ठगी चल रही हैं कि बेचारे दयारामजी चाहकर भी ठगाने से बच नहीं पाते हैं - दिन भर मोबाइल पर विज्ञापन आते रहते है कभी फलाना ऑफर तो कभी धिकाना ऑफर। कहीं एक के साथ दो फ्री, तो कहीं 80 प्रतिशतडस्काउंट का ऑफर, कहीं बिना ब्याज किश्तों में भुगतान की पेशकश तो कहीं आकर्षक पैकेज का प्रस्ताव। भगवान कहलाने वाले देश के महान से महानतम खिलाड़ियों, फिल्मों के महानायकों द्वारा किए जा रहे भ्रामक विज्ञापन के फेर में, भोले-भाले दयारामजी लगभग रोज ही ठगाते हैं। कभी तेल में तो कभी साबुन में, कभी केसर वाले गुटखे में तो कभी चाय, मसाले, टूथपेस्ट और तूफानी ठंडे में। एक बार तो एक विज्ञापन देखकर वे ठंड में अंडर गारमेंट खरीद लाये, फिर बिना स्वेटर पहने तेज ठंड में बाजार चले गए। बेचारे! जैसे-तैसे ठिठुरते-ठिठुरते वापस घर पहुंचे।

कबीरा आप ठगाइए, और ना ठगिए कोय।
आप ठगे सुख होत है, और ठगे दुख होय॥

दयारामजी बचपन से ही कबीर के उपरोक्त दोहे से काफी प्रभावित रहे और उन्होने इसे अपने जीवन में शब्दशः क्रियान्वित भी किया। यही कारण रहा कि बेचारे बचपन से आज तक कभी मित्रों से तो कभी रिशतेदारों से, कभी व्यापारी से तो कभी नेताओं से और कभी-कभी तो साधुओं से भी लगातार ठगा ही ठगा रहें है। पिछले सप्ताह की ही बात है, वे पत्नी के साथ बाजार में एक दुकान पर गए, अभी दुकान में बैठे ही थे कि नौकर चमचमाते ग्लास में पानी लेकर आया, दयाराम जी के गले से पानी उतरा भी नहीं था कि दुकानदार ने बड़े आग्रह पूर्वक पूछा आप चाय कॉफी क्या लेंगे? अपना आदर सत्कार होते देख दयारामजी गदगद हो गए और बोले कुछ भी चलेगा। उन्हे नहीं मालूम था कि इस आधा कप चाय की कीमत उन्हे कितनी चुकानी होगी। सामान लेकर जब घर पहुंचे और उनके पोते ने उसी सामान का भाव ऑनलाइन देखकर बताया तो वे ठगे से रह गए।

देश में इतने प्रकार की ठगी चल रही हैं कि बेचारे दयारामजी चाहकर भी ठगाने से बच नहीं पाते हैं - दिन भर मोबाइल पर विज्ञापन आते रहते है कभी फलाना ऑफर तो कभी धिकाना ऑफर। कहीं एक के साथ दो फ्री, तो कहीं 80 प्रतिशत डिस्काउंट का ऑफर, कहीं बिना ब्याज किश्तों में भुगतान की पेशकश तो कहीं आकर्षक पैकेज का प्रस्ताव। भगवान कहलाने वाले देश के महान से महानतम खिलाड़ियों, फिल्मों के महानायकों द्वारा किए जा रहे भ्रामक विज्ञापन के फेर में, भोले-भाले दयारामजी लगभग रोज ही ठगाते हैं। कभी तेल में तो कभी साबुन में, कभी केसर वाले गुटखे में तो कभी चाय, मसाले, टूथपेस्ट और तूफानी ठंडे में। एक बार तो एक विज्ञापन देखकर वे ठंड में अंडर गारमेंट खरीद लाये, फिर बिना स्वेटर पहने तेज ठंड में बाजार चले गए। बेचारे! जैसे-तैसे ठिठुरते-ठिठुरते वापस घर पहुंचे।

ओल्ड-एज दयारामजी ने नौकरी में वेतन-भत्तों का पैकेज तो सुना था किन्तु हैरानी और आश्चर्य उन्हे तब हुआ जब हॉस्पिटल की मृत्युशैय्या पर पड़े मरीज के इलाज के लिए पैकेज ऑफर किया गया। और तो और पोते पोतियों के स्कूल कॉलेज की फीस, वकील की फीस, हलवाई(केटरर्स) का मेहनताना भी पैकेज के अंतर्गत भुगतान हो रहे है, यह सुनकर वे अचंभित रह गए।

बाजार में ठगी का सबसे वैध और संवैधानिक हथियार है एमआरपी, जिसके माध्यम से मामूली-से-मामूली लागत वाली चीजों के ऊंचे-ऊंचे दाम निर्धारित किए जाते है और फिर इन्ही दामों पर भारी-भरकम डिस्काउंट देकर जनता को ठगा जाता है। आपके ठगाने की सीमा यहीं समाप्त नहीं होती है, इसके आगे भी यदि आप सोचते हैं कि आपका बैंक बेलेंसे तो कम-से-कम सुरक्षित है, तो यह भी आपका भ्रम ही है। क्योंकि इसके लिए भी देश में साइबर-ठग इतने सक्रिय हैं कि वे आपको डिजिटल-अरेस्ट करके आपसे करोड़ों रुपये ठग सकते है, और आपके बैंक खाते में झाड़ू लगा सकते है। डिजिटल ठगाई के प्रकरणों में बैंक तथा पुलिस का सुरक्षा तंत्र एक लकवा-ग्रस्त मरीज की तरह असहाय सा देखता भर रह जाता है, कर कुछ नहीं पाता।

देश में, जबसे चुनाव आरंभ हुए हैं आदरणीय दयारामजी को सबसे अधिक नेताओं के झूठे और आकर्षक वादों ने ठगा है। नेताओं द्वारा उन्हे कभी महंगाई, तो कभी भ्रष्टाचार से मुक्ति, कभी राष्ट्र-भक्ति के लोकलुभावन नारों से तो कभी धर्म और जाति के नाम पर ठगा जाता रहा है। चुनावों में तो जनता को ठगने के लिए हमारे शातिर नेता, कभी अपने हाथ-पैर तुड़वाकर सहानुभूति अर्जित करते हैं तो कभी किसी नेता की मृत्यु पर सहानुभूति से वोट हासिल करते हैं। दिल्ली में तो एक नेता ने बेहद ईमानदार बनकर ठगा और रेकॉर्ड मतों से विजयी होने के बाद बेईमानी के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये। किन्तु क्या करें उन्हे तो कबीरजी के दोहे अनुसार ठगाने में ही सुख मिलता है।

दयारामजी जब भी बीमार होते हैं उन्हे डॉक्टरों द्वारा गंभीर बीमारियों का डर बता कर अनावश्यक जाँचे करवाई जाती है, जाँचों की फीस में डॉक्टर साहब का भी कमीशन निर्धारित होता है। बड़े-बड़े कार्पोरेट द्वारा संचालित अस्पतालों में तो डॉक्टरों को ऑपरेशन के टारगेट दिये जाते है। वे अपने मरीजों को मामूली-सी स्वास्थ्य समस्या के लिए भी ऑपरेशन की सलाह देकर ठगी की दुकान चला रहा है। अस्पताल के कमरों में होटल-नुमा सुविधाएं देकर खूब लूटा जा रहा है। आयुष्यमान बीमा योजना ने तो अस्पतालों में ठगी और लूट को दुगुना कर दिया है।

दयारामजी जब अपने पोते को स्कूल में भर्ती करवाने गए तो एक वर्ष की फीस-राशि (पैकेज) सुनकर उनके होश उड़ गए। इतनी राशि में तो उन्होने पढ़ाई-लिखाई के साथ ही, गाजे-बाजे के साथ बड़े धूम-धाम से अपनी सगाई भी कर ली थी। अङ्ग्रेज़ी माध्यम के इन कॉन्वेंट स्कूलों द्वारा भी खूब ठगी की जा रही है, बच्चों को स्कूल में नाश्ता और दोपहर के भोजन तथा स्पोर्ट्स के नाम पर भारी फीस वसूल की जाती है, बच्चों का पढ़ाई पर कम और खाने पर ज्यादा ध्यान होता है, यही कारण है कि बच्चों के दिमाग की बजाए वजन अधिक बढ़ता जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि देश में केवल दयारामजी ठगा रहे हैं, कबीरदास जी के दोहे का असर सरकारों पर भी देखने को मिलता है। अब देखिये ना संबंध सुधारने के चक्कर में हमारी सरकारें पाकिस्तान से कई बार ठगा चुकीं हैं। हर बार उस नापाक की चिकनी-चुपड़ी बातों से ठगा जाती है तथा परिणाम में कभी युद्ध तो कभी आतंकवादी घटनाओं का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार हमने ट्रम्प को चुनाव जिताने के लिए क्या-क्या नहीं किया वैल्कम ट्रम्प पर करोड़ों फूँक दिये किन्तु ट्रम्प ने हमारे देश पर ही अधिकतम टेरीफ़ जड़ दिया।

आखिर में परेशान होकर बेचारे दयारामजी साधुओं के पास गए, किन्तु वहाँ से भी ठगा के ही घर को लौटे।

कविता

लिए फिरते हैं

कमलेश कुमार दीवान

हम एक साथ कई किस्म लिए फिरते हैं
जान तो एक कई जिस्म लिए फिरते हैं।

देखते ख्वाब फिसलते ही चले जाते हैं
कमाल है हम कई इस्म लिए फिरते हैं।

सफ़र में कौन साथी तलाश है किसकी
ढूंढने उनको यूं कई चश्म लिए फिरते हैं।

कुरेदने से दर्द और बढ़ जाता है दीवान
हम अपने में कई ख़स्मि लिए फिरते हैं।

1-इस्म -नाम ,2-चश्म -आंख
3-ख़स्मि -नाक का घाव

स्मृतियां

अरविंद उपरीत जलज

गाहे बगाहे न जाने क्यों
पुरानी यादें
दस्तक दे जाती है!
लाख करूं कोशिशें फिर भी
नींद कहां आती है!

स्मृति पटल पर अंकित
तुम्हारी यादों को बहुत मिटाया!
ऐसे जड़े हुए से आखर हैं
उन्हें चाहकर भी मिटा न पाया!!

आज पुरानी किताब में रखा
एक सुर्ख सा गुलाब हाथ आया!
खुशबू अब तलक थी कायम,
भले ही वो था सूखा सा मुरझाया!!

लघुकथा

एक कदम आगे

आरती चितौड़ा

आसमान की तरफ मुस्कुराते हुए मौलिक दादाजी न जाने किस से बात कर रहे थे। रोज सुबह से शाम तक अपनी चेयर पर बैठकर इंग्लिश की किताबें पढ़ते रहते हैं। चाय, नाश्ता और खाने के लिए ही उठते हैं। फिर चेयर पर बैठकर किताबें पढ़ने लग जाते हैं। साथ में रहने वाला, लगभग 15 से 16 वर्ष का छोटू उनके सारे काम करता है ।दादाजी को देखकर उससे रहा नहीं गया , और उसने पूछ लिया , क्या बात है, दादा जी , आप किस से बात कर रहे हैं? उन्होंने कहा - आ बेटा मेरे पास बैठ मैं बताता हूँ... देख, ऊपर तेरी दादी है। मैं उसको रोज तो डिस्टर्ब नहीं करता , पर जब मन बहुत उदास होता है , तो मैं उससे बात कर लेता हूँ। वह हमेशा काम में मुझसे आगे रहती थी। हम दोनों साथ में कॉलेज में पढ़ाने जाते थे। वह इतनी फुर्ती से काम करती। मैं नहा - धोकर तैयार होता जब तक वह रेडी हो जाती और दोनों का टिफिन पैक कर देती थी। बाजार से खरीदी करनी हो, रिश्तेदारों के यहां जाना हो या घर पर छोटा सा गेट टूगेदर हो हर काम में परफेक्ट थी। मैं उसको हमेशा कहता, तुम मुझसे एक कदम आगे ही रहती हो, और रहा भी करो, अच्छा लगता है। पर देख छोटू इसी एक कदम आगे ने मुझे अकेला छोड़ दिया। वह मुझसे पहले भगवान के पास चली गई। आज उसकी यही बात याद आ गई। बेटा, अर्जुन तो विदेश में जाकर बस गया और मैं बूढ़ा अकेला कभी अपने अकेलेपन से प्यार करता हूँ, कभी गुस्सा आता है ,कभी झुंझलाहट होती है तो कभी तेरी दादी से शिकायत कर देता हूं। छोटू ने दादाजी का हाथ अपने हाथ लिया और कहा, क्यों चिंता करते हो मैं हूं ना आपके साथ। दादाजी ने आसमान की तरफ देखा और मुस्कुरा कर कहने लगे - तुम तो बहुत खुश होगी ना हमेशा की तरह आगे रहने वाली वहां भी मुझसे आगे निकल गई। छोटू यह देख और सुन रहा था। धीमे से मुस्कुराते हुए जाने कैसे अचानक दादाजी का चश्मा भीग गया।

पुस्तक समीक्षा

मधुर कुलश्रेष्ठ
समीक्षक

सभ्य, सुसंस्कृत एवं खुशहाल समाज का आईना दिखाती कहानियां

जिस तरह सावन की फुहारों से मानव हृदय में भावनाओं तथा उमंगों का सागर हिलोरें लेने लगता है उसी तरह सुप्रसिद्ध साहित्यकार सुरेश सौरभ का कहानी संग्रह 'भीगते सावन' हृदय में हर्ष और वेदना की तरंगें प्रवाहित करने लगता है। इस संग्रह की कहानियों में बारिश की बूंदों से उठी मिट्टी की सोंधी खुशबू जैसी संस्कारों की महक है। गर्मी से सूखती-झुलसती धरती को अपनी फुहारों से हरा-भरा बना देने जैसी लुप्तप्राय देशी कला को बचाने की जिद है। बारिश में हरहराती नदी से टूटते तटबंधों की तरह विकास के प्रवाह में खत्म होते पारिवारिक संबंधों की वेदना है तो जज़्बातों की उफनती नदी में सब्र के तटबंध हैं।

सुरेश सौरभ जी, जीवन की धूप-छाँव से मिटते-बनते सायों के कुशल चितेरे हैं, इसीलिए संग्रह की कहानियाँ किसी विमर्श या वाद में नहीं पड़ती हैं बल्कि सीधे-सीधे जिंदगी के विभिन्न मुद्दों की बात करती हैं। यह बदलते समय की विडंबना ही है कि जिस 'ठ' से 'ठठेरा' रटते-रटते बच्चा भाषा सीखता है वही बच्चा ठठेरे के यथार्थ को जानता ही नहीं है। एक समय था, जब आज के ग्लोबल विलेज जैसे हमारे गाँव सहकार अर्थव्यवस्था की पूर्ण इकाई हुआ करते थे। तब ठठेरा, कुम्हार, चर्मकार, सुनार, सुतार आदि सम्माननीय व्यवसाय होते हुए एक-दूसरे की जरूरत पूरी किया करते थे तथा ठठेरा काका, सुनार मामा, कुम्हार चाचा या सुतार ताऊ का संबोधन और सम्मान पाते थे। संग्रह की कहानी 'एक था ठठेरा' में ठठेरे की उपेक्षा से उपजे दर्द को सुरेश सौरभ जी ने पूरी शिद्दत से महसूस कराया है- 'बूढ़ा बोला- 'अब क्या काम होगा, बुझते हुए इस दिए से'।' (पेज 16)

जहाँ उपेक्षा से दर्द होता है वहीं विश्वास के टूटने से अथाह पीड़ा होती है। यह पीड़ा तब और असहनीय हो जाती है जब कोई अपना इसे तोड़ता है। सौरभजी ने आदमी की इस पीड़ा को शब्दों में पिरोया है संग्रह की कहानी 'औलाद के आँसू' में- 'बेटी मेरे अंतर्मन को ऐसा आभास हो रहा है कि तुम्हारा यह मोबाइल नहीं, हमारा विश्वास कहीं गिर गया था। हमारी दी हुई शिक्षा और दिए गए संस्कार कहीं गिर गए थे।' (पेज 95)

सुरेश जी की कहानियों में पीड़ा के दंश बहुत गहरे हैं। वे समाज की हर विसंगति से आहत होते हैं फिर उनकी लेखनी से शब्द, अश्रु बिन्दु सरीखे झर-झर झरने लगते हैं। पीड़ा का सरित प्रवाह कहानी खत्म होने पर ही रुकता है। ये पीड़ा कहानी 'आप के अहसासों में रहूँगी' की हर उस लड़की की हो सकती है, जिसे शादी के बाद अपने शौक ताक पर रख देने को मजबूर होना पड़ता - 'जभी कुछ पढ़ने बैठी तो कहीं उन्होंने चाय की पेशकश कर दी, तो कभी श्रद्धा के रुदन ने मेरी रचनाधर्मिता में खलल पैदा की, फिर पत्रिका और कागज को किनारे सरका कर बस काम काम... काम और कुछ नहीं... क्या स्त्री सिर्फ काम लिए है? क्या स्त्री सिर्फ बिस्तर के लिए है? क्या स्त्री सिर्फ दासी की तरह घुट-घुटकर जीने के लिए है। क्या हम स्वचलित यंत्र हैं। क्या हमारे अंदर भावनाओं-संवेदनाओं का बिरवा नहीं हैं? क्या उसे खाद-पानी नहीं चाहिए? क्या यही मेरा जीवन है, क्या यही मेरा अस्तित्व है?' (पेज 54)

यह पीड़ा कहानी 'पटाक्षेप' के मुरारी जैसे तमाम लोगों की हो सकती है जो राजनीति में बढ़ते हुए अपराधीकरण का शिकार होते हैं। जहाँ कल्लन जैसे गुंडे विधायक बन जाते हैं तो आम आदमी का जीना दूभर कर देते हैं। लेखक की पीड़ा इस अंश में देखी जा सकती है - 'राजनैतिक गलियारों में आज सैकड़ों मफियाओं को जनमत से शरण मिल रही है- फिर पद प्रतिष्ठा पर कल्लन जैसे नेता पब्लिक का ही सिर कुचलते हैं- एक ओर कल्लन जैसे नेता को गिरफ्तार करके बर्खास्त करने की कवायद होती है, तो दूसरी ओर जनता के समर्थन से कल्लन जैसे नेता अपनी कालिमा से राजनीति में अपना परचम फहरा रहे हैं। आखिर गुनहगार कौन है ?... / ... मेरी कलम सिसकती है, मेरे शब्द सहमते हैं, मेरे वाक्य तड़पते हैं।' (पेज 82)

राजनैतिक रैलियों में भाड़े पर लाए गए पुरुषों, औरतों और बच्चों को क्या कुछ नहीं सहना पड़ता है! इस देश का यह कैसा विकास है जहाँ चंद रुपयों और एक समय अच्छे खाने के मोह में झबुआ की युवा लड़की पारो जैसी कमसिन लड़कियाँ रैली में मनचलों के द्वारा शारीरिक शोषण का शिकार हो जाती हैं। यह दर्द अकेले झबुआ का नहीं होना चाहिए बल्कि उस हर नागरिक में टीसना चाहिए जो इन परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं।

सुरेश जी एक संवेदनशील रचनाकार होने के साथ-साथ जिम्मेदार नागरिक भी हैं। इसलिए वे समाज की छोटी से छोटी घटना पर अपनी तीक्ष्ण निगाह रखते हैं। संग्रह की कहानियाँ केवल पीड़ा की ही कहानियाँ नहीं हैं बल्कि वे समाज की अच्छाइयों से भी पाठक को रूबरू कराती हैं। कहानी 'भीगते सावन' के माध्यम से सुरेश जी समीर जैसे अनेक नेक लड़कों, जो अपनी नैतिकता के कारण योनोंन्मत लड़की को पाकर भी मौके का फायदा नहीं उठाते हैं, को भी सामने लाते हैं, 'समीर गुस्से से, अपना हाथ छुड़ाकर, आगबबूला हो गया -'पागल हो तुम! पागलों को समझाने का टाइम नहीं है मेरे पास ... ओके गुडबाय'।' (पेज 35)

संग्रह की अन्य कहानियाँ भी इसी समाज और हमारे आस-पास की ही हैं। 'मुर्गी चोर' जैसे शख्स हर शहर, हर गाँव में देखने को मिल जाते हैं। 'विश्वास लौट आया' कहानी जैसी वृद्धाश्रमों में माँ-बाप को छोड़ने की घटनाएं, आज समाज में कोढ़ की फैल रही हैं, दुखद बात यह है कि हर वृद्ध केशव जैसा भाग्य लेकर नहीं आता है। 'आखिरी खत' जैसे गिद्ध दृष्टि हालात गरीबों के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी हैं जहाँ भूख से मरे व्यक्ति के महाभोज में भी लोगों को छककर जिमाना पड़ता है। कई तरह के प्रलोभनों व दबावों में आकर 'आतंकी' बनने की घटनाएं आज सहज ही सुनने को मिल जाती हैं। कुछ लोगों के कुटिलता दूसरों के जीवन में जहर घोल देती है जिसकी परिणति 'प्रकाश चला गया' जैसी होती है।

सुरेश सौरभ जी यथार्थ के लेखक हैं। इन कहानियों समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों, पुलिस, प्रशासन व समाज की संवेदनहीनता, भ्रष्ट व्यवस्था एवं बदलते समय के बदलते परिदृश्यों को सूक्ष्मता से उकेरा गया है। कहानियों के बिंबों में इतनी सजीवता है कि लगता है सारी घटनाएं हमारे सामने ही घट रही हैं। कहानियों की भाषा सहज व सरल है तथा परिस्थिति अनुसार देशज, तद्भव एवं अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। कथ्य, बिम्ब, शैली, भाषा के आधार पर पुस्तक 'भीगते सावन' पठनीय है।

संग्रह 'भीगते सावन' पाठकों को सावन जैसी फुहारों से आनंदित तो करता ही है साथ ही ऊपर-ऊपर दिख रहे सभ्य, सुसंस्कृत एवं खुशहाल व्यक्ति व समाज की तह में जाकर आनंद, दर्द व पीड़ा का अनुभव भी कराता है। यह संग्रह भ्रष्ट, आपराधिक तथा भागदौड़ वाले आधुनिक जीवन में सरलता, दयालुता और आपसी संबंधों से सच्ची खुशी पाने का मूल मंत्र भी देता है।

भीगते सावन (कहानी संग्रह)
लेखक : सुरेश सौरभ
प्रकाशक: अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली
प्रथम संस्करण: 2024
मूल्य - 160/-

विचार

असली प्रसन्नता अंतर्मन में निहित

मानवी

आधिक उन्नति और तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन को बहुत आसान बनाया है, फ़िर भी मनुष्य अपनी भागदौड़ भरी ज़िंदगी में संतुलन साध नहीं पाता ,क्योंकि चाह की लालसा मन को एकाग्र और शांति नहीं होने देती ,और जब मन और चेतन दोनों अशांत हों तब मनुष्य प्रसन्न नहीं रह सकता है वास्तविक प्रसन्नता अंदर से आती है न की बाहर की चमक दमक से। दरअसल दुःख और सुख मानव जीवन के दो अंग है। मानव जीवन में दुःख और सुख ये सब समय और संघर्ष के अनुसार बदलते रहते हैं। लेकिन असली प्रसन्नता तब मिलती है , जब व्यक्ति अपनी उपलब्धियों और परिस्थितियों को स्वीकार कर संतोष का भाव विकसित करता है। जब वह अपने अतीत को बिना पछतावे और भविष्य को बिना अधिक चिंता के देखता है, तभी वह सच में खुश रह पाता है। दरअसल, सच्ची प्रसन्नता बाहरी चीजों पर नहीं, बल्कि हमारे भीतर के संतोष पर निर्भर करती है। जब व्यक्ति अपने कौशल, स्वभाव और जीवनशैली के बीच संतुलन बना लेता है, तब वह मानसिक शांति और संतुलन महसूस करता है। साथ ही, जब वह अपने परिवार, काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाता है और अपनी इच्छाओं व सीमाओं को समझता है, तो उसकी खुशी और गहरी हो जाती है। नैतिकता भी प्रसन्नता का एक महत्वपूर्ण आधार है। यह हमें सही और गलत में अंतर करना सिखाती है और सही निर्णय लेने में मदद करती है। इससे जीवन में स्पष्टता आती है और मन को शांति मिलती है। प्रसन्नता को किसी मापदंड में नहीं बाँधा जा सकता। यह एक भावना है, जो हर व्यक्ति अलग-अलग तरीके से अनुभव करता है। इसके साथ ही यह शरीर से भी जुड़ी है। जब हम खुश होते हैं, तो हमारे शरीर में डोपामिन, सेरोटोनिन, ऑक्सीटोसिन और एंडोर्फिन जैसे ÷हैप्पी हार्मोन÷ निकलते हैं, जो हमें अच्छा महसूस कराते हैं। इसलिए खुशी का असर हमारे मन, शरीर और व्यवहार पर साफ दिखाई देता है।आज के समय में प्रसन्नता को समझने के लिए विश्व स्तर पर भी प्रयास हो रहे हैं।

दुनिया में कितने राष्ट्र खुश हैं और खुश रहने का क्या मानक है इसके लिए वर्ष 2012 से वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही है, जिसमें केवल पैसे या विकास ही नहीं, बल्कि सामाजिक सहयोग, स्वतंत्रता और मानसिक संतुलन जैसे पहलुओं को भी शामिल किया जाता है।वर्ष 2026 की रिपोर्ट के अनुसार, फिनलैंड दुनिया का सबसे खुशहाल देश रहा, जबकि आइसलैंड और डेनमार्क उसके बाद रहे। वहीं भारत इस सूची में 116वें स्थान पर रहा।

भारत की परंपरा में हमेशा से संतोष और आंतरिक शांति को महत्व दिया गया है। वेद, उपनिषद और भगवद्गीता जैसे ग्रंथ बताते हैं कि सच्ची खुशी हमारे भीतर ही होती है, बाहरी चीजों में नहीं। लेकिन आज का समाज, खासकर युवा, इस सच्चाई से दूर होता जा रहा है। भौतिक सुख-सुविधाओं और दिखावे की दौड़ में हम अपने मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। व्यस्त जीवन के कारण हम अपने स्वास्थ्य की भी अनदेखी कर रहे हैं, जबकि स्वस्थ शरीर और शांत मन के बिना सच्ची खुशी संभव नहीं है। डिजिटल युग ने भी हमारी सोच को बदला है। सोशल मीडिया पर लगातार तुलना और दिखावा हमें थोड़ी देर की खुशी तो देता है, लेकिन स्थायी संतोष नहीं दे पाता। ऐसे समय में जरूरी है कि हम प्रसन्नता को केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और नीतिगत स्तर पर भी महत्व दें। इसके लिए देश में एक हैप्पीनेस इंडेक्स बनाया जा सकता है। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य, काउंसलिंग और जागरूकता पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षा में भी बदलाव जरूरी है। केवल पढ़ाई और अंकों पर ध्यान देने के बजाय नैतिकता, संतोष और हैप्पीनेस करिकुलम को शामिल करना चाहिए। इसके अलावा योग, ध्यान, संतुलित जीवनशैली और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देना भी जरूरी है। अंत में, यह समझना जरूरी है कि प्रसन्नता केवल एक भावना नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता का माप है। केवल सफलता ही सब कुछ नहीं है, बल्कि संतोष और मानसिक शांति भी उतनी ही जरूरी है।इसलिए हमें अपने विकास के नजरिए को बदलना होगा और उसे प्रसन्नता से जोड़ना होगा। क्योंकि आखिर में वही प्रगति सही है, जो जीवन को सिर्फ सफल ही नहीं, बल्कि खुश और संतुष्ट भी बनाए। एक खुशहाल राष्ट्र ही समावेशी विकास की ओर बढ़ सकता है, जो राष्ट्र जितना खुशहाल होगा वह उतना ही समृद्ध होगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

लोक रीतियों को कृतियों में ढालते-संवारते कलाकार अल्मेलकर

वृक्ष, वृक्ष के तने, पत्तियों का शोर, झुरमुट, झाड़ियाँ, दो डालियों के बीच से दिखाई देता वन का बेहतरीन व्यू, पत्तियों से छन कर आती सूरज की चमकती, दमकती, लहर मारती किरणें और वहाँ का पूरा माहौल जैसे रच-बस सा गया था अल्मेलकर के जेहन में। पूरा का पूरा जंगल उनके स्केच बुक पर पसर गया हो जैसे। किसी भी एक स्पॉट पर घंटों बैठ कर कृतियों का सृजन उनकी दिनचर्या में शामिल हो गई थी। कृतियों में आलेखन, विवरणात्मक आलेखन जो उन्हें लोक रीतियों से प्राप्त हुआ था, को जंगलों में घूमने से और अधिक विस्तार मिला। उनके कृतियों में पेड़, पौधे, जंगल कुछ विशेष अवस्था के साथ मिलते हैं या कह सकते हैं जंगलों में लुका-छिपी करती रौशनी का असर उनके कृतियों पर भी हैं। किसी का चेहरा कभी नीला तो कभी किसी और रंग में ढल जाता है, जो वास्तव में तो संभव नहीं है पर प्रकाश के खेल से कुछ भी संभव है और जो इनके फलक पर संभव हुआ है। जंगलों में निवास करने वाले वासी भी इनके कृतियों में विशेष उपस्थिति रखते हैं और विशेष तरीके से रखते हैं। रहन-सहन पहनावा सब कुछ जैसे अल्मेलकर के नजरों में बस सा गया था।

कलाकार गहन अध्ययन के साथ ही विषय के गहराइयों तक जाकर विषय से संघर्ष करता है, जूझता है परिस्थितियों से उसके बाद उबरते हुए अपनी अभिव्यक्ति करता है। कभी-कभी तुरंत अभिव्यक्ति हो जाती है तो कभी-कभी उसी अभिव्यक्ति में वर्षों लग जाते हैं। कलाकार विषय में डूब जाना चाहता है, मर मिट जाना चाहता है उसके बाद कहीं जाकर भावयुक्त कृतियों का निर्माण कर पाता है। कुछ इसी तरह के कलाकार थे ए. ए. अल्मेलकर जो निरंतर जंगलों में घूमते रहे। वृक्ष, वृक्ष के तने, पत्तियों का शोर, झुरमुट, झाड़ियाँ, दो डालियों के बीच से दिखाई देता वन का बेहतरीन व्यू, पत्तियों से छन कर आती सूरज की चमकती, दमकती, लहर मारती किरणें और वहाँ का पूरा माहौल जैसे रच-बस सा गया था अल्मेलकर के जेहन में। पूरा का पूरा जंगल उनके स्केच बुक पर पसर गया हो जैसे। किसी भी एक स्पॉट पर घंटों बैठ कर कृतियों का सृजन उनकी दिनचर्या में शामिल हो गई थी। कृतियों में आलेखन, विवरणात्मक आलेखन जो उन्हें लोक रीतियों से प्राप्त हुआ था, को जंगलों में घूमने से और अधिक विस्तार मिला। उनके कृतियों में पेड़, पौधे, जंगल कुछ विशेष अवस्था के साथ मिलते हैं या कह सकते हैं जंगलों में लुका-छिपी करती रौशनी का असर उनके कृतियों पर भी हैं। किसी का चेहरा कभी नीला तो कभी किसी और रंग में ढल जाता है, जो वास्तव में तो संभव नहीं है पर प्रकाश के खेल से कुछ भी संभव है और जो इनके फलक पर संभव हुआ है। जंगलों में निवास करने वाले वासी भी इनके कृतियों में विशेष उपस्थिति रखते हैं और विशेष तरीके से रखते हैं। रहन-सहन पहनावा सब कुछ जैसे अल्मेलकर के नजरों में बस सा गया था।

कलाकार अल्मेलकर जी जिनके कृतियों में पशु, पक्षी, पेड़-पौधे जंगल तथा वहाँ के लोग अक्सर दिख जाते हैं और दिख जाती है आकृतियों की भाव-भंगिमा, लय, लोच के साथ बहुत ही खूबसूरत आंखें। जहां कृतियां पहले तो बोल्ड स्ट्रोक के साथ यात्रा पर होतीं थीं पर धीरे-धीरे समय के साथ, अपने रास्ते में बदलाव के साथ, कलाकार वाल्टर लैंगहैमर और एन.एस. बेंद्रे से प्रभावित होते हुए नये तथा अपने खुद के राह पर जाकर पूरी हुई, जो बड़ी ही मोहक शैली के रूप में प्रसिद्ध हुई। आदिवासी रहन-सहन, परिवेश, रंगों का ताजापन, सपाट एवं अधिकतर भूरेपन से भरी कलाकृतियों के धनी कलाकार ए. ए. अल्मेलकर जी का जन्म 1920 में हुआ था।

जे. जे. कॉलेज में कला की विधिवत शिक्षा के साथ ही बॉम्बे आर्ट सोसाइटी, ललित कला अकादमी जैसे श्रेष्ठ संस्थानों के तरफ से एक से अधिक बार पुरस्कृत होने का सौभाग्य भी इनको मिला। सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में व्याख्याता के रुप में आपकी सेवा वहां के विद्यार्थियों हेतु बहुत ही लाभप्रद रही। जैतून के तेल से चमक उत्पन्न करना, लोकरंग को लोगों के बीच से ग्रहण करना तथा लोक तक यामिनी राय से भिन्न, स्व के बोध से ओतप्रोत कृतियों को पहुंचाना आपके कार्यक्षेत्र में शामिल था। दैनिक जीवन आपका प्रिय विषय था?। पनघट, पनिहारिन, ग्रामवासी एवं उनका रहन-सहन आपका रहन-सहन हो गया था। मिट्टी से बने घर, सफेद रंग पर विविध रंगों का लेपन तथा उस पर चित्रित लोकरंग का बारीकी से अध्ययन के बाद

आपके फलक तक पहुँचना, पारखी दृष्टि एवं सिद्धहस्तता का परिचायक है। पेपर तथा बोर्ड पर स्याही, कैनवास पर तैल रंग, जल रंग का अलग तरीके से प्रयोग बिल्कुल ही ठोस रुप में बिना फ्लो के, भारतीय विषयों को आधुनिक तरीके से पेंट करना, पोत एवं रेखाओं का संयोजन, शुद्ध रंगों का चटख प्रयोग, श्याम-स्वेत कृतियों में रेखाओं का संयमित एवं बोल्ड संचालन, आपके गुणों में शामिल था। महिलाएं, प्रिपरेशन, हनुमान, करमा नृत्य के कई चित्र, मलाया का प्राकृतिक दृश्य, मेरा घर, हिरन, द्वारपाल, दरवाजे की ओट आपकी प्रमुख कृतियां हैं। चित्र ÷गैंडा÷ में बारीक रेखाओं में संयोजित सूर्य, कमल का फूल, चिड़ियों की व्यग्रता के सापेक्ष बड़े ही मौन तरीके से गैंडों का वहां होना चित्र के भारी होने की कहानी बयां कर रही है, भूरे और काले रंगों से युक्त ये चित्र दर्शक को मोहित कर लेती है। लेडी इन मार्केट रेखांकन में जबरदस्त स्ट्रोक देखने को मिलता है। आपके अधिकतर कृतियों में चेहरे पर स्वाभाविक रंग देखने को नहीं मिलता बल्कि रंगों की विविधता होती है। आपके कृतियों में मुगल, राजपूत एवं भारतीय लघुचित्रण शैली के भी दर्शन गाहे-बगाहे हो जाते हैं। कृति तीन महिलाएं में विशेष बात को लेकर गहन चिंता में डूबी महिलाएं दिख रही हैं, मुद्रा एकदम से अपनी बात कह ले रहा है। गले, माथे और केश पर का श्रृंगार प्राकृतिक वस्तुओं से सृजित है पर पूरे कृति में भाव ही भारी है, नेत्र यहां भी उनके विशेषता के अनुरूप ही है। सफेद रंग का अचानक से हुआ प्रयोग कृतियों को तेज प्रदान करता है। रिद्मिक रेखाओं के बीच कुछ ऐसी कृतियाँ भी हैं जिसे देखकर संदेह होता है कि ये उनकी कृति है कारण कहीं-कहीं हथेलियों, चेहरों पर से वो लयात्मकता गायब सी हो गई है जो आपकी पहचान रही है। प्राकृतिक दृश्यों में भी कहीं-कहीं बहुत ही भारीपन की झलक है जो उनके विशेषताओं पर काला टीका का काम करता है। कहीं-कहीं अपरिपक्वता भी परिलक्षित है पर कृतियाँ बेहतरीन, बोल्ड स्ट्रोक युक्त और गहरी भावयुक्त होने से कुछ को नजरंदाज किया जा सकता है। आग लग जाने की वजह से अधिकांश कृतियां नष्ट हो गईं पर नहीं नष्ट हुआ आपका जज़्बा, आप निरंतर नये निर्माण में लगे रहे। आपके द्वारा करीब साल भर बाद ही पुनः तैयार कृतियों का प्रर्दशन किया गया। भारत के साथ ही सिंगापुर, इंडोनेशिया, मलेशिया, रोम, टोकियो, हांगकांग, न्यूयॉर्क जैसे देशों में भी आपकी कृतियां खूब सराही गई। स्वर्ण तथा रजत जैसे पुरस्कार आपके झोली में हमेशा ही बने रहे आपके नाम करीब चालीस एकल प्रर्दशनियां हैं। आपकी कृतियां नागपुर संग्रहालय, अहमदाबाद संग्रहालय, मलेशिया, सिंगापुर, के साथ ही राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली में भी सुरक्षित है। आप धर्मयुग, मौज, संदेश, जनशक्ति जैसे कई महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुए हैं। कलाकार अलमेलक जी 12 दिसंबर 1982 को सदा के लिए दुनिया छोड़ चले।

कुमाऊँ की परंपरा

प्रयाग पाण्डे

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

जब तक ऋतुएं आएंगी, स्वाभाविक है भिटौली भी आएगी

आ कुमाऊँ अंचल की सामाजिक परंपराएं, रीति-रिवाज और मान्यताएं विशिष्ट हैं। यहाँ के लोक जीवन में प्रकृति का गहरा प्रभाव है। यहाँ की अधिकांश परंपराएं और रीति - रिवाज प्रकृति पर आधारित हैं। कुमाऊँ में ऋतु के अनुसार लोक पर्व मनाए जाते हैं। यहाँ विभिन्न ऋतुओं में अलग-अलग लोक पर्व मनाने की परंपरा है।

वसंत ऋतु को ऋतुराज कहा जाता है। वसंत ऋतु का आगमन ठंड के मौसम के विदा होने का सूचक है। वसंत ऋतु में प्रकृति का सौंदर्य निखर जाता है। प्रकृति में नवचेतना जागृत हो जाती है। संपूर्ण वातावरण में उल्लास भर जाता है। ठंड के मौसम में हरियाली विहीन हो गए पेड़-पौधों में कोंपल, हरियाली और गुलाबीपन की छटाएं दृष्टिगोचर होने लगती हैं। संपूर्ण प्रकृति में यौवन की बहार फूटने लगती है। कुदरत के चारों ओर खुशियां बिखर जाती हैं। सरसों फूलने लगती है। रस भरे काफल के फलने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। बुराँस के फूल अपनी मनमोहक छटा बिखरने को आतुर हैं। पेड़-पौधे बहुरंगी फूल-फलों से लद गए हैं तो समझिए कि वसंत ऋतु आ गई है। कुमाऊँ की लोक संस्कृति में वसंत माने देवी की प्रतिमूर्ति समझी जाने वाली बेटी- बहनों को मान- सम्मान देने का मौसम।

प्रकृति के इस नवयौवन को देख मानव मन भी हर्ष और उल्लास से भर जाता है। हर्षोल्लास की इस ऋतु में मानव को अपने प्रियजनों की याद सताने लगती है। विशेष अवसरों, तीज-त्यौहारों में अपने प्रियजनों की याद सबको सताती है, लेकिन वसंत भूली- बिसरी यादों को यकायक ताजा कर देता है। वसंत ऋतु में अपने प्रियजनों से भेंट करने की तीव्र इच्छा जागृत हो उठती है। भेंट करने की आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए वसंत ऋतु में कुमाऊँ अंचल में अत्यंत आत्मीय और भावुक कर देने वाली परंपरा का निर्वहन किया जाता है, जिसे भिटौली कहते हैं।

बसंत का सुआगमन होते बुराँश और सरसों सहित नाना प्रकार के फल-फूल लिखने लगें, कपुवा के साथ ही अन्य पंछियों के सुमधुर स्वर सुनाई दें और प्रकृति के चारों ओर उल्लास का वातावरण हो तो समझिए कि कुमाऊँ में भिटौली का महीना आ गया है। भिटौली का महीना यानी चैत्र के आते ही ब्याहता बेटी- बहिनें ससुराल में अपने पिता और भाइयों की प्रतीक्षा करने लगती हैं।

पहले के जमाने में पहाड़ में बाल्यावस्था में ही बच्चियों की शादी कर दी जाती थी। उस दौर में पहाड़ में यातायात और संचार के कोई साधन नहीं थे। अपनी बेटी -बहन से भेंट- मुलाकात बमुश्किल हो पाती थी। माता-पिता और भाई को सदैव अपनी बेटी-बहन की याद सताती रहती थी। वसंत के आते ही माता-पिता और भाई को अपनी ब्याहता बेटी- बहन की याद और अधिक सताने लगती थी, सो,अपनी बेटी-बहन से भेंट कर कुशल-क्षेम जानने और उन्हें सम्मानित करने के निमित्त भिटौली नामक परंपरा ने जन्म लिया।

चैत्र मास में पहाड़ में आमतौर पर मांगलिक कार्य नहीं होते हैं,लेकिन पहाड़ में इसे भिटौली का महीना माना जाता है। कुमाऊँ में इस महीने विवाहिता बेटी-बहनों को भिटौली देने की प्राचीन परंपरा है। भिटौली यानी उपहारों के साथ भेंट-मुलाकात, मान- सम्मान और इस बहाने बेटी-बहन की आशल - कुशल जानने की तीव्र जिज्ञासा।

भाई या पिता भिटौली देने के लिए बेटी-बहन के ससुराल जाते हैं। पहले से भिटौली की एक टोकरी ले जाई जाती थी, जिसे स्थानीय भाषा में छापरी कहते हैं। भिटौली में अपनी प्यारी बिटिया-बहन को वस्त्र, सामर्थ्यानुसार विभिन्न प्रकार के स्थानीय पकवान, मिठाई और नगदी भेंट दिए जाने की परंपरा है। मायके से भिटौली के रूप में आए पकवानों और मिष्ठान को बेटी- बहनें अपने ससुराल में वितरित करतीं थीं। चैत्र मास प्रारंभ होते ही विवाहिता बेटी -बहनें भिटौली की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगती हैं।भाइयों वाली बहनें अपनी भाई की राह जोहती हैं कि वह भिटौली लेकर आता ही होगा। जिनके भाई नहीं होते वे उदास होती हैं।

भिटौली को लेकर कुमाऊँ के अनगिनत मर्मस्पर्शी लोक गीत रचे गए हैं, जो भिटौली परंपरा की तत्कालीन महत्ता को अभिव्यक्त करते हैं–

चैत बैशाग भिटाइ मैनाँ,
भेटि औ भाया चाइ रौली बैना।

अर्थात- चैत और वैशाख बहिनों को भिटौली देने का महीना है। हे भाई, तुम बहन से भेंट कर आओ,वह राह देखती होगी।

उधर बहन भी भाई के आने की प्रतीक्षा में है,उसे घुघुती पक्षी की कुहुक भी कचोटती है–

ए नि बासा घुघूती रून झुन,
म्यारा मैता का देसा रुन झुन,
मेरी ईजु सुणौली रुन झुन,
मैं चानै रै गयूं वीके बाट।

अर्थात– ए घुघूती (पहाड़ में पाए जाने वाला एक खूबसूरत पक्षी) तू ऐसे उदास स्वर में मत कुहुक, मेरे मायके के क्षेत्र में ऐसे उदास स्वर में मत कुहुक, मेरी माँ उदास हो जाएगी,मैं अपने भाई की राह देखती थक गई,लेकिन वह नहीं आया।

ब्याहता बहन अपने भाई से भेंट और भिटौली के लिए इतनी व्याकुल हो उठती है कि उसे स्वप्न में भी अपना भाई आते दीखता है–

रितु ऐ गे रणा मणी, रितु ऐ रैणा।
डाली में कफुवा वासो, खेत फुली दैणा।
कावा जो कणाण, आजि रते वयांण।
खुट को तल मेरी आज जो खजांण,
इजु मेरी भाई भेजली भिटौली दीणा।
रितु ऐ गे रणा मणी,रितु ऐ रैणा।
वीको बाटो मैं चैंरुलो।
दिन भरी देली में भै रुंलो।
बैली रात देखछ मैं लै स्वीणा।
आँगन बटी कुनै ऊँनौछीयो
कां हुनेली हो मेरी वैणा ?
रितु रैणा,ऐ गे रितु रैणा।
रितु ऐ गे रणा मणी, रितु ऐ रैणा।।

भावार्थ – रुन झुन करती ऋतु आ गई है।ऋतु आ गई है रुन झुन करती।

डाल पर कफुवा पक्षी कुंजने लगा।
खेतों मे सरसों फूलने लगी।

आज तड़के ही जब कौआ घर के आगे बोलने लगा।

जब मेरे तलवे खुजलाने लगे,तो मैं समझ गई कि-

माँ अब भाई को मेरे पास भिटौली देने के लिए भेजेगी।

रुन झुन करती ऋतु आ गई है।
ऋतु आ गई है रुन झुन करती।
मैं अपने भाई की राह देखती रहूँगी।
दिन भर दरवाजे में बैठी उसकी प्रतीक्षा करुँगी।
कल रात मैंने स्वप्न देखा था।
मेरा भाई आंगन से ही यह कहता आ रहा था -
कहाँ होगी मेरी बहिन ?
रुन झुन करती ऋतु आ गई है।
ऋतु आ गई है रुन झुन करती।।

आज समूचा संसार अत्याधुनिक युग में प्रवेश कर चुका है। यातायात और संचार सुविधाओं में अकल्पनीय प्रगति हो गई है। इस सबके बावजूद तीज-त्यौहारों और लोक परंपराओं का महत्व और प्रासंगिकता आज भी पूर्ववत बनी हुई है। तीज-त्यौहार और समृद्ध लोक परंपराएं ही मानव को उसकी जड़ों से जोड़ती हैं,जैसे- भिटौली। हर साल ऋतु लौट कर आती है, भिटौली के बहाने प्रियजन एक-दूसरे से मिलते हैं। जब तक ऋतुएं आएंगी, स्वाभाविक है कि भिटौली भी आएगी। बार-बार। हर साल।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

काटान- विजयसेतु के बेजोड़ अभिनय से सजी वेब सीरीज

सिरीज़ की पूरी कहानी एक रहस्यमयी कटे हुए सिर और मुथु नाम के एक चरित्र पर केन्द्रित है । मुथु का कत्ल हो जाता है और पुलिस के लिये इस कत्ल की गुत्थी सुलझाना एक कठिन पहेली है । मुथु कौन था, उसकी मौत के पीछे क्या राज है और मरने से ठीक पहले उसके चेहरे पर वो रहस्यमयी मुस्कान क्यों थी? इन्ही सवालों का जवाब ढूँढती यह सिरीज दर्शकों को रोमांच् तमिलनाडु के मदुरै के पास एक छोटे से गाँव की है ,यहाँ का थाना पिछले तीन साल से खाली पड़ा है क्योंकि वहाँ इस बीच कोई अपराध ही नहीं घटा । इस स्थिति को देखते हुए प्रशासन इस थाने को बन्द करने का मन बना लेती है और तभी गाौव के पास पहाड़ी पर एक कटा हुआ सिर मिलता है. कांस्टेबल कालाई पांडियन (वडिवेल मुरुगन) को जब यह सिर मिलता है, तो वह इसे अपने अधिकार क्षेत्र में ले आता है ताकि केस की जाँच के बहाने उसका थाना बन्द न हो । यहीं से शुरू होती है मुथु (विजय सेतुपति) की पहचान की तलाश.।

जा उतरते मार्च में एक नई क्राइम थ्रिलर वेब सीरीज ' काटान ' ओटीटी पर रिलीज हुई है जो मुथु की केन्द्रीय भूमिका निभाने वाले विजय सेतुपति के शानदार अभिनय और रहस्य -रोमांच की बुनावट वाली आकर्षक पटकथा के कारण दर्शकों में बेहद लोकप्रिय हो रही है । दस एपीसोड्स की यह वेब सिरीज़ तमिल के अलावा हिन्दी , तेलुगू, मलयालम और कन्नड़ में भी बनाई गई है । एम. मणिकन्दन और बी.अजित कुमार के निर्देशन में बनी इस सिरीज़ की की सबसे खास बात ये है कि जब आप इसे देखने बैठते हैं तो आप भी उस कहानी का हिस्सा बन जाते हैं. छोटा सा गाँव, लोगों के बात करने का अंदाज, खान-पान, और डांस सब इतने अच्छे से फिल्माया गया है कि आपका जुड़ाव इससे खुद हो जाएगा । कुल मिलाकर, यह एक ऐसी थ्रिलर है जो अपनी खामियों के बावजूद अपनी यूनिक कहानी और विजय सेतुपति की परफॉर्मेंस की वजह से देखी जा सकती है.

सिरीज़ की पूरी कहानी एक रहस्यमयी कटे हुए सिर और मुथु नाम के एक चरित्र पर केन्द्रित है । मुथु का कत्ल हो जाता है और पुलिस के लिये इस कत्ल की गुत्थी सुलझाना एक कठिन पहेली है । मुथु कौन था, उसकी मौत के पीछे क्या राज है और मरने से ठीक पहले उसके चेहरे पर वो रहस्यमयी मुस्कान क्यों थी? इन्ही सवालों का जवाब ढूँढती यह सिरीज दर्शकों को रोमांच् तमिलनाडु के मदुरै के पास एक छोटे से गाँव की है ,यहाँ का थाना पिछले तीन साल से खाली पड़ा है क्योंकि वहाँ इस बीच कोई अपराध ही नहीं घटा । इस स्थिति को देखते हुए प्रशासन इस थाने को बन्द करने का मन बना लेती है और तभी गाौव के पास पहाड़ी पर एक कटा हुआ सिर मिलता है. कांस्टेबल कालाई पांडियन (वडिवेल मुरुगन) को जब यह सिर मिलता है, तो वह इसे अपने अधिकार क्षेत्र में ले आता है ताकि केस की जाँच के बहाने उसका थाना बन्द न हो । यहीं से शुरू होती है मुथु (विजय सेतुपति) की पहचान की तलाश.। पुलिस के लिए सबसे बड़ी पहेली यह है कि जिस इंसान का कटा सिर है? वह आखिरी वक्त में मुस्कुरा क्यों रहा था?

सिरीज़ की पटकथा कुछ इस तरह सुनी गई है कि यह सिर्फ एक कत्ल की गुत्थी नहीं है, बल्कि बीस साल लम्बे कालखण्ड अर्थात वर्ष 1997 से लेकर वर्ष 2017 तक के तमाम घटनाक्रम को दिखाती है.। मुथु की जिन्दगी के कई रहस्य सामने आते हैं और कहानी तमिलनाडु की गलियों से निकलकर केरल के जंगलों और फिर मुम्बई के खतरनाक अण्डरवर्ल्ड तक जा पहुँचती है । जैसे-जैसे जाँच आगे बढ़ती है, पुलिस को अहसास होता है कि यह मामला जितना सीधा दिख रहा था, असल में उतना ही पेचीदा और गहरा है। दस एपीसोड्स के दौरान मुथु के अतीत से जुड़ी कई ऐसी परतें खुलती हैं जो हैरान कर देती हैं।

सिरीज की सबसे बड़ी ताकत इसके कलाकार हैं. विजय सेतुपति ने एक बार फिर साबित किया है कि वो सादगी के साथ परदे पर जान फूँकना जानते हैं । उनकी भाव-भंगिमा और संवाद सम्प्रेषण यथार्थपरक हैं। मिलिन्द सोमन भी शिवेट्टन की भूमिका में खूब फबे हैं और उनका अण्डरवर्ल्ड कनेक्शन कहानी में नया मोड़ लाता है, जिसकी सीधी टक्कर जॉनी (सुदेव नायर) से होती है । पुलिस टीम के रूप में वडिवेल मुरुगन, मुथुकुमार और सिंगमपुली ने न केवल सीरियस इन्वेस्टिगेशन को संभाला, बल्कि कॉमेडी का तड़का भी लगाया है । अभिनेत्रियों मे डांसर मीना (ऋषा जैकब्स मोनिका) और चिट्टू (अबी नक्षत्र), और मुथु की पुरानी प्रेमिका सिंधु (कलाईवानी भास्कर). का भी सिरीज़ में अच्छा खासा रोकहानी में सभी का दमदार रोल भी. इसके अलावा गवाह के रूप में बालाजी शक्तिवेल पुलिस की काफी मदद करते हैं।

सामान्य तौर पर यह एक अच्छी वेबसिरीज़ है मगर सिरीज़ की यदि कोई कमजोरी है तो वह है इसकी लम्बाई । दस एपीसोड की यह सिरीज कई जगहों पर काफी खिंची हुई लगती है । इसे देखते हुए महसूस हो सकता है कि कहानी को बेवजह लम्बा किया गया है, जिससे पेस थोड़ी धीमी पड़ जाती है. कहीं-कहीं पर प्लॉट इतना उलझ जाता है कि उसे समझना मुश्किल हो जाता है। साथ ही, पुलिस वालों का रवैया भी थोड़ा अजीब दिखाया गया है, जहाँ वो केस सुलझाने से ज्यादा नशे में डूबे नजर आते हैं ।

धार जिले के भाजपा तिरला मंडल में प्रशिक्षण वर्ग को क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जमवाल ने संबोधित किया

प्रशिक्षण सिर्फ एक अवसर नहीं है, बल्कि यह निरंतर प्रक्रिया है: अजय जामवाल

धार। पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महा अभियान 2026 अंतर्गत शनिवार को जिले के धार विधानसभा क्षेत्र भाजपा तिरला मंडल में आयोजित प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन सत्र का शुभारंभ भाजपा के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

इस दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर,भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, धार विधायक नीना वर्मा, प्रशिक्षण महाअभियान संभागीय टोली से दिलीप पटोदिया व अनंत पंवार ,जिला संयोजक भाजपा महामंत्री राकेश पटेल, पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ,भाजपा मंड़ल अध्यक्ष शुभम पाटीदार मंच पर उपस्थित रहे। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा भारत माता पंडित दीनदयाल उपाध्याय व डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर माल्यार्पण दीप प्रज्वलित कर सत्र आरंभ किया। स्वागत उद्बोधन भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती व वर्ग गीत विक्की पाटीदार ने गाया।

क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल ने भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संगठन की विचारधारा, सेवा और समर्पण के भाव के साथ कार्य करने का संदेश दिया तथा सभी में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया।

श्री जामवाल ने कहा कि मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं ने संगठन विस्तार के संघर्ष के दौर को देखा है और आज सरकार में रहते हुए जिम्मेदारी के समय का अनुभव भी किया है। समय-समय पर आत्मविश्लेषण करें, क्योंकि सिखाना अपेक्षाकृत आसान है, लेकिन सीखना कठिन होता है। हम उन्हीं मूल्यों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं, जो हमारे महापुरूषों ने संगठन और कार्यकर्ता निर्माण के संबंध में दिए थे। हम सभी साधनारत कार्यकर्ता हैं। कार्यकर्ताओं को निरंतर सीखने और अभ्यास के माध्यम से अपनी कार्यक्षमता और प्रस्तुति क्षमता में सुधार लाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण सिर्फ एक अवसर नहीं है, बल्कि यह एक निरंतर प्रक्रिया है, जो कार्यकर्ता को न केवल बेहतर बनाती है, बल्कि संगठन को भी मजबूत करती है। प्रशिक्षण वर्ग का उद्देश्य सिर्फ भाजपा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण ही नहीं बल्कि कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास और निष्ठा का संचार करना है, जिससे वे संगठन के विकास में अपना योगदान और अधिक प्रभावी ढंग से दे सकें। भाजपा की सफलता और संगठन क्षमता सिर्फ विचारधारा पर आधारित नहीं है, बल्कि कार्यकर्ताओं की निरंतर शिक्षा, साधना और अभ्यास पर भी निर्भर करती है।

शेष सात सत्रों में पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर विधायक नीना वर्मा ,जिला महामंत्री राकेश पटेल, जिला उपाध्यक्ष राखी राय भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखें। मंडल में प्रशिक्षण वर्ग में जिला उपाध्यक्ष महेश रावला जिला मंत्री आरती पटेल समेत अपेक्षित मंडल पदाधिकारी कार्य समिति सदस्य व भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहें। संचालन प्रदीप पाटीदार ने किया।

छात्राएं जीवन में लक्ष्य निर्धारण, सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास के साथ आगे बढ़े-कलेक्टर

'भविष्य से भेंट' कार्यक्रम में कलेक्टर ने छात्राओं को दिए सफलता के मंत्र

धार। शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, धार में स्कूल चले हम अभियान अंतर्गत आयोजित 'भविष्य से भेंट' कार्यक्रम में कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने छात्राओं से सीधा संवाद किया। इस अवसर पर उन्होंने छात्राओं को जीवन में लक्ष्य निर्धारण, सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

कलेक्टर ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रतिस्पर्धा के इस दौर में दूसरों से तुलना करने के बजाय स्वयं की क्षमता पर विश्वास रखना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि विद्यार्थी अपने प्रदर्शन का ईमानदारी से मूल्यांकन करें और कमियों को सुधारने पर ध्यान दें। उन्होंने कहा, 'बहाने बनाने के बजाय मेहनत पर ध्यान केंद्रित करना ही सफलता की कुंजी है। 'अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए कलेक्टर ने छात्राओं को सीख दी कि आत्मविश्वास और अहंकार के बीच के अंतर को समझें। ज्ञान के प्रति विनम्रता और गुरुओं का सम्मान आपको सफलता के शिखर तक ले जाता है।

बदलते परिवेश का जिक्र करते हुए उन्होंने छात्राओं को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसी नई तकनीकों से जुड़ने और भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप करियर चुनने की सलाह दी। उन्होंने गणित और सामान्य ज्ञान को मजबूत बनाने के साथ-साथ समय प्रबंधन (Time Management) के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर अपनी कार्यक्षमता (Efficiency) बढ़ाएं।पढ़ाई के तनाव को कम करने के लिए कलेक्टर ने खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों को अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा कि नियमित व्यायाम से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि मानसिक संतुलन भी बना रहता है।इस अवसर पर कलेक्टर ने छात्राओं को पाठयपुस्तकों का वितरण भी किया ।

कार्यक्रम के समापन पर छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका कलेक्टर ने अत्यंत सरल और प्रेरक ढंग से उत्तर दिया। संवाद के इस सत्र से छात्राओं के आत्मविश्वास में स्पष्ट वृद्धि देखी गई। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी केशव वर्मा, डीपीसी प्रदीप खरे, विद्यालय प्राचार्य व स्टाफ सहित बड़ी संख्या में छात्राएं मौजूद रही।

खाद्यान्न उपार्जन, भंडारण और लॉजिस्टिक्स में 150 करोड़ का घोटाला

किसानों के हक पर डाका, गरीबों की थाली में 'जहर' परोस रही सरकार: जीतू पटवारी

भोपाल। मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जितेंद्र (जीतू) पटवारी ने प्रदेश में खाद्यान्न उपार्जन, भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स व्यवस्था में व्याप्त व्यापक भ्रष्टाचार, प्रशासनिक विफलता और राजनीतिक संरक्षण पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि यह केवल कुप्रबंधन नहीं, बल्कि संगठित लूट का एक बड़ा तंत्र है, जिसने किसानों के अधिकारों और गरीबों की खाद्य सुरक्षा दोनों को खतरे में डाल दिया है। उन्होंने कहा कि रायसेन जिले के वेयरहाउसों में 35 करोड़ रुपये की लागत से खरीदा गया लगभग 20,000 मीट्रिक टन गेहूं, रखरखाव और कीटनाशक के नाम पर 150 करोड़ रुपये का बोझ बनाकर सड़ने के लिए छोड़ दिया गया। 34 बार कीटनाशक छिड़काव के बावजूद अनाज का 'जहर' बन जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह पूरा मामला फर्जी बिलिंग, घटिया सामग्री और अधिकारियों-ठेकेदारों की मिलीभगत का परिणाम है। उन्होंने ने कहा कि यह एक अकेला मामला नहीं है। पिछले चार वर्षों में प्रदेश में 10 लाख मीट्रिक टन से अधिक गेहूं सड़ चुका है, जिसमें से लाखों टन अनाज पूरी तरह नष्ट हो गया। इस सड़े हुए अनाज की नीलामी से भी सरकार को लगभग 200 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ, जो सीधे तौर पर जनता के पैसे की बर्बादी है।

उन्होंने जबलपुर और सिवनी में उजागर हुए 'घोस्ट ट्रांसपोर्ट' घोटाले का उल्लेख करते हुए कहा कि बिना वास्तविक परिवहन के करोड़ों रुपये निकाल लिए गए। 92% ट्रिप फर्जी पाए गए, और कार, स्कूटर तथा दोपहिया वाहनों के नंबरों से सैकड़ों क्विंटल धान ढोने का दावा किया गया। यह दर्शाता है कि भ्रष्टाचार अब तकनीकी और संगठित रूप ले चुका है। श्री पटवारी ने आरोप लगाया कि वेयरहाउस आवंटन में भी सत्ता से जुड़े लोगों को प्राथमिकता दी जा रही है, जबकि आम वेयरहाउस मालिकों के भुगतान लंबित हैं। क्षमता से अधिक भंडारण दिखाकर किराया घोटाला किया जा रहा है, और वास्तविक अनाज खुले में सड़ रहा है। उन्होंने कहा कि यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब प्रदेश में 26% से अधिक बच्चे कुपोषण से जूझ रहे हैं, और दूसरी ओर लाखों क्विंटल अनाज गोदामों में सड़कर बर्बाद हो रहा है। गरीबों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से घटिया और मिलावटी अनाज परोसा जा रहा है, जो उनके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है। श्री पटवारी ने कहा कि यह पूरा तंत्र–नागरिक आपूर्ति निगम, वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन और सहकारिता विभाग–आपसी मिलीभगत और जिम्मेदारी से बचने की प्रवृत्ति के कारण विफल हो चुका है। इसका सीधा खामियाजा किसान, गरीब और आम नागरिक भुगत रहे हैं।

कांग्रेस की प्रमुख मांगें :

- रायसेन के 150 करोड़ के घोटाले की स्वतंत्र फोरेंसिक जांच कराई जाए।
- वेयरहाउस आवंटन और भुगतान की पूरी सूची सार्वजनिक की जाए।
- दोषी अधिकारियों और संबंधित राजनैतिक संरक्षण देने वालों पर आपराधिक मुकदमा दर्ज हो।
- सड़े हुए अनाज के नुकसान की भरपाई किसानों के हित में की जाए।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सख्त निगरानी तंत्र लागू किया जाए।

मध्यप्रदेश में एलपीजी के 5केजी कनेक्शन मिलेंगे, फिर बदल सकेंगे

ऑयल कंपनी कस्टमर को भेजेगी एसएमएस,इसमें बुकिंग-डिलीवरी की जानकारी रहेगी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में नए एलपीजी कनेक्शन के लिए पोर्टल बंद है। इस वजह से ग्राहकों को 14केजी सिलेंडर नहीं मिल रहे हैं। इन्हें राहत देने के लिए खाद्य विभाग अब 5केजी गैस कनेक्शन देगा। ताकि, उन्हें राहत मिल सके। वहीं, अब ऑयल कंपनियां कस्टमर को मोबाइल पर एसएमएस भेजेगी। जिसमें बुकिंग कन्फर्म होने और डिलीवरी कब होगी? ये जानकारी रहेगी। गैस को लेकर ऑयल कंपनी और अफसरों के साथ शनिवार को एसीएस (फूड एंड सिविल सप्लाय) रश्मि शमी ने मीटिंग भी की। पोर्टल बंद होने की वजह से भोपाल और इंदौर के कस्टमर सबसे ज्यादा परेशान हैं। इंदौर में लोगों की परेशानी बढ़ी है।

वहीं, भोपाल में गैस किल्लत के बीच लोग नए कनेक्शन के लिए आवेदन कर रहे हैं, लेकिन पोर्टल बंद होने से के बायसी और नए कनेक्शन से जुड़ी सभी प्रक्रियाएं सस्पेंड है। मीटिंग में कहा गया कि 14केजी वाला कनेक्शन नहीं दे रहे तो 5 किलो का ही कंपनी दे दें। जब पोर्टल शुरू होगा, तब इसी कनेक्शन को 14 किलो में कन्वर्ट कर देंगे। इसे लेकर जल्द ही आदेश जारी हो सकते हैं। बता

दें कि प्रदेश में इंडेन कंपनी के सिलेंडर को लेकर सबसे ज्यादा दिक्कत हैं। इसके नए कनेक्शन भी नहीं मिल पा रहे हैं। भारत पेट्रोलियम एवं एचपी में थोड़ी राहत है।

ऑयल कंपनियों के नए नियम से परेशान एजेंसी संचालक- मीटिंग में अफसरों ने बताया कि ऑयल कंपनियां बिना जानकारी के ही नए नियम लागू कर देती हैं। वर्तमान में इंडेन में डीएसी नंबर जनरेट नहीं कर रही। इससे सिलेंडर की गाड़ियां डिपो से नहीं निकल पाती। वहीं, मार्च क्लोजिंग के नाम पर हिसाब-किताब मांगा जा रहा है। भोपाल की चंद्रकांता गैस एजेंसी से पिछले साल का 1100 सिलेंडर का हिसाब मांगा गया है। इससे लोड नहीं आ पाया और यहां ग्राहकों की भीड़ लग गई। अपर मुख्य सचिव शमी ने डीएसी व्यवस्था और सर्वर को ठीक करने की बात कही।

एसएमएस में पूरी जानकारी होगी- ऑयल कंपनियां बुकिंग कराने वाले ग्राहकों को जो एसएमएस भेजेगी, उसमें बुकिंग के कन्फर्म होने और घर पर कब तक सिलेंडर की डिलीवरी हो जाएगी? ये लिखा होगा। ग्राहकों को कहा जाएगा कि वे गैस एजेंसी पर न पहुंचे। उनके घर पर ही सिलेंडर पहुंचा दिया जाएगा। इससे पैनिक वाली स्थिति नहीं रहेगी।

भोपाल में सिलेंडर गायब होने की जांच- भोपाल के लालघाटी स्थित प्रियंका गैस एजेंसी पर शुक्रवार को सिलेंडर को लेकर जमकर हंगामा हुआ था। बड़ी संख्या में लोग गैस सिलेंडर लेने के लिए एजेंसी पहुंचे थे। इनमें कई ऐसे ग्राहक भी शामिल थे, जिन्होंने 4 से 5 दिन पहले ही बुकिंग कराई थी। ग्राहकों का आरोप है कि जब वे सिलेंडर लेने पहुंचे तो एजेंसी की ओर से बताया गया कि उनका सिलेंडर पहले ही डिलीवर किया जा चुका है, जबकि हकीकत में सिलेंडर उनके घर तक पहुंचा ही नहीं था। इस बात को लेकर लोगों में नाराजगी बढ़ गई। उन्होंने एजेंसी पर विरोध जताना शुरू कर दिया था। फूड कंट्रोलर चंद्रभान सिंह जादौन ने बताया कि इस मामले में टीम मौके पर भेजकर जांच कराई जा रही है।

भाजपा सरकार में किसानों के साथ नहीं हो रहा न्याय : किसान कांग्रेस अध्यक्ष गोचरे

बैतूल। मुलताई, आठनेर व सातनेर सहित आसपास के क्षेत्रों में हुई तूफानी बारिश, ओलावृष्टि से किसानों की फसलें बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। अत प्रशासन को ओलावृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का शीघ्र सर्वे करवाकर किसानों को उचित मुआवजा देना चाहिए। अन्यथा किसान कांग्रेस सड.कों पर उतरकर बड़ा आंदोलन करेगी। यह बातें जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष जगदीश गोचरे ने जिला कांग्रेस कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में कही। उन्होंने सरकार से तत्काल इसका सर्वे कर किसानों को मुआवजा देने की मांग की है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदा से हुए नुकसान की भरपाई में देरी, किसानों को और ज्यादा संकट में डाल देगी। मुलताई सहित आसपास के क्षेत्र में हुई ओलावृष्टि के कारण गेहूं सहित अन्य फसलें बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। खेतों में खड़ी फसलें गिर गईं और कई जगहों पर पूरी तरह खराब हो गई हैं। किसानों को उम्मीद थी कि इस बार अच्छी उपज से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी, लेकिन अचानक हुई इस आपदा ने उनकी मेहनत पर पानी फेर दिया। जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष श्री गोचरे ने पत्रकार वार्ता में कहा कि प्रभावित किसानों के खेतों का बिना देरी किए सर्वे कराया जाए। प्रभावित क्षेत्रों में नुकसान का उचित आंकलन कर किसानों को शीघ्र मुआवजा दिया जाए, ताकि किसान आत्महत्या जैसा कदम न उठायें। उन्होंने कहा कि मुआवजा प्रक्रिया में देरी किसानों के लिए और मुश्किलें खड़ी करेगी। पहले से ही गेहूं खरीदी में देरी और कर्ज के दबाव से जूझ रहे किसानों के सामने अब ओलावृष्टि ने नया संकट खड़ा कर दिया है। फसल खराब होने से उनकी आय प्रभावित होगी, जिससे कर्ज चुकाने में भी परेशानी बढ़ेगी। ऐसे में समय पर प्राथमिकता से किसानों को मुआवजा मिलना बेहद जरूरी है।

जिले के आठनेर-मुलताई में ओलावृष्टि

तेज आंधी-बारिश से सब्जी और गेहूं फसल को नुकसान

एस. द्विवेदी, बैतूल। जिले में शनिवार को मौसम ने अचानक करवट ली। आठनेर, मुलताई, घोड़ाडोंगरी, बैतूल जिला मुख्यालय सहित जिले के अन्य क्षेत्रों में बारिश के साथ साथ ओलावृष्टि भी हुई। आठनेर के आसपास के गांवों में लगभग 20 से 25 मिनट तक तेज आंधी, बारिश और ओलावृष्टि हुई। इस दौरान खेतों में चार अंगुल तक ओले जम गए, जिससे फसलों को प्रारंभिक तौर पर नुकसान पहुंचा। स्थानीय किसानों के अनुसार, ओलावृष्टि इतनी तीव्र थी कि खड़ी फसलों के दाने जमीन पर बिखर गए और इसके साथ साथ सब्जी की फसलों को भी भारी नुकसान हुआ है, खासकर टमाटर सहित अन्य सब्जियां पूरी तरह खराब हो गई। रामपुर मनियाखेड़ी रोड के आसपास के कई खेतों में गेहूं की फसल भी प्रभावित हुई है। इसी दौरान भैंसदेही क्षेत्र में भी हल्की बूंदाबांदी दर्ज की गई। बैतूल शहर में भी शाम को तेज बारिश हुई, जिससे तापमान में गिरावट आई और मौसम कुछ समय के लिए ठंडा हो गया। मौसम विभाग के अनुसार, बैतूल जिला सहित आसपास के कई इलाकों के लिए 50 से 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने और गरज-चमक के साथ बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक, अप्रैल के दौरान बैतूल में तापमान सामान्यतः: 32 से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना रहती है। हालांकि, बीच-बीच में हल्की बारिश और आंधी के कारण मौसम में उतार-चढ़ाव बना रहता है। आने वाले दिनों में कुछ स्थानों पर गरज-चमक के साथ हल्की बारिश की संभावना जताई गई है।

डहुआ सहित कई गांवों में बिछी सफेद चादर, किसान चिंतित

मुलताई क्षेत्र के डहुआ, परमंडल, हिवरा और खैरवानी सहित कई गांवों में शनिवार को दोपहर में अचानक मौसम ने करवट ली और लगभग आधा घंटा तक तेज ओलावृष्टि हुई, जिससे गेहूं सहित अन्य फसलों को भारी नुकसान पहुंचा है। दोपहर तक मौसम सामान्य था, लेकिन अचानक काले बादल छा गए और तेज बारिश के साथ ओले भी गिरने लगे। देखते ही देखते गांव में ओलों की सफेद चादर बिछ गई। वहीं रोड पर बर्फ की सफेद चादर बिछ जाने से मनाली जैसा नजारा था। किसानों का कहना है कि इस बेमौसम ओलावृष्टि ने उनकी मेहनत पर पानी फेर दिया है। खेतों में खड़ी गेहूं की फसल के साथ-साथ कटाई के बाद रखी गई फसल भी प्रभावित हुई है। तेज ओलों की मार से गेहूं की बालियां झड़ गईं और दानों के खराब होने की आशंका बढ़ गई है। इसके अलावा, सब्जी की फसलें भी इस प्राकृतिक आपदा से अछूती नहीं रहीं। टमाटर, मिर्च और अन्य सब्जियां, ओलों की मार से खराब हो गई है, जिससे किसानों को दोहरी मार झेलनी पड़ रही है।

आरएसएस की समन्वय बैठक

भाजपा-विहिप सहित संघ के अनुषांगिक संगठनों के प्रतिनिधि हो रहे शामिल

भोपाल (नप्र)। भोपाल के केरवा रोड स्थित शारदा विहार परिसर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दो दिवसीय समन्वय बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक शनिवार से शुरू हुई है, जिसमें आरएसएस की प्रांत कार्यकारिणी के पदाधिकारियों सहित अनुषांगिक संगठनों (भाजपा, विहिप, सेवा भारती) के पदाधिकारी शामिल हो रहे हैं। इस बैठक में संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों और कार्यपद्धति पर चर्चा होगी।

- **आज बैठक में शामिल हो सकते हैं हेमंत खंडेलवाल-** संघ की समन्वय बैठक में भाजपा की ओर से प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल रविवार को शामिल हो सकते हैं। पिछली बार संघ की समन्वय बैठक में तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल और संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा शामिल हुए थे। वर्तमान में भाजपा में कोई प्रदेश संगठन महामंत्री नहीं हैं। प्रदेश संगठन महामंत्री रहे हितानंद शर्मा को दो महीने पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मध्य क्षेत्र सह-बौद्धिक प्रमुख बनाया गया था। फिलहाल मप्र में संगठन में क्षेत्रीय संगठन मंत्री अजय जामवाल अहम जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। ऐसे में हेमंत खंडेलवाल के साथ अजय जामवाल समन्वय बैठक में शामिल हो सकते हैं।
- **समन्वय बैठक में इन संगठनों के प्रतिनिधि हो रहे शामिल-** संघ के राजनीतिक संगठन भारतीय जनता पार्टी के अलावा विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, दुर्गा वाहिनी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विद्या भारती, भारतीय शिक्षण मंडल, सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, आरोग्य भारती, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, स्वदेशी जागरण मंच, सहकार भारती, संस्कार भारती, अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद, क्रीड़ा भारती, विज्ञान भारती, राष्ट्र सेविका समिति के पदाधिकारी शामिल हो रहे हैं।

कंगना रनौत

दूसरी पारी में 'क्वीन' के सामने चुनौती

भारतीय सिनेमा में कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जो सिर्फ अपने काम से नहीं, बल्कि अपनी शख्सियत से भी लगातार चर्चा में बने रहते हैं और कंगना रनौत उन्हीं में से एक हैं। बेबाक अंदाज, दमदार अभिनय और विवादों से गहरे रिश्ते ने उन्हें एक अलग पहचान दी। लेकिन, अब उनका करियर एक दिलचस्प मोड़ पर खड़ा है जहां राजनीति और सिनेमा के बीच संतुलन बनाते हुए वे अपनी 'दूसरी पारी' शुरू करने जा रही हैं। सवाल साफ है, क्या कंगना फिर से दर्शकों के दिलों पर राज कर पाएंगी!

रेणु जैन

कंगना रनौत का फिल्मी सफर कभी सीधी रेखा जैसा नहीं रहा। उन्होंने शुरुआत से ही अलग तरह के किरदार चुने और खुद को एक आउट साइडर के तौर पर स्थापित किया। क्वीन, तनु वेड्स मनु, और 'मणिकर्णिका' जैसी फिल्मों की सफलता ने उन्हें इंडस्ट्री की सबसे मजबूत अभिनेत्रियों में ला खड़ा किया। खासकर 'क्वीन' ने उनके करियर को नई ऊंचाई दी। एक ऐसी फिल्म जिसमें उन्होंने साबित किया कि बिना बड़े हीरो के भी फिल्म दर्शक बटौर सकती है। लेकिन, इस सफलता के बाद उनका करियर स्थिर नहीं रहा। हाल के वर्षों में 'धाकड़' और 'तेजस' जैसी बड़े बजट की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकीं। इन

फिल्मों से यह साफ हो गया कि सिर्फ स्टार पावर अब दर्शकों को थिएटर तक खींचने के लिए काफी नहीं है। आज का दर्शक कहानी, कंटेंट और कनेक्ट तीनों चाहता है।

इस दौरान कंगना का झुकाव राजनीति की ओर भी स्पष्ट रूप से बढ़ा। उन्होंने कई राष्ट्रीय मुद्दों पर खुलकर अपनी राय रखी और सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहीं। उनके बयानों ने उन्हें एक मजबूत राजनीतिक आवाज़ तो बनाया, लेकिन इसका असर उनके फिल्मी करियर पर पड़ा। एक तरफ उनके समर्थकों की संख्या बढ़ी, तो दूसरी तरफ एक बड़ा वर्ग उनसे दूरी बनाता नजर आया। राजनीति में उनकी भूमिका अभी तक पूरी तरह स्थापित नहीं मानी जा सकती। वे एक मुखर समर्थक और विचार रखने वाली शख्सियत के रूप में तो उभरी, लेकिन जमीनी राजनीति में उनकी पकड़ उतनी मजबूत नहीं दिखाई दी। यही वजह है कि उन्हें अभी न पूरी तरह सफल राजनेता कहा जा सकता है, न सफल अभिनेत्री।

अब कंगना फिर से फिल्मों की ओर रुख कर रही हैं और इसे उनकी दूसरी पारी के रूप में देखा जा रहा है। इस वापसी की चर्चा खास तौर पर 'क्वीन 2' को लेकर तेज हो गई है। बताया गया कि इस फिल्म पर काम चल रहा है और इसकी शूटिंग जल्द शुरू हो सकती है। हालांकि, घोषणा अभी बाकी है। पहली क्वीन का निर्देशन विकास बहल ने किया था, जिसमें राजकुमार राव और लिसा हेडन भी अहम भूमिकाओं में नजर आए थे। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता हासिल की थी और आज भी इसके डायलॉग और सीन सोशल मीडिया पर वायरल होते रहते हैं।

बताया जा रहा कि 'क्वीन 2' में कंगना का किरदार पहले से काफी बदला हुआ होगा। एक शहरी, आत्मविश्वासी और और भी ज्यादा सशक्त महिला के रूप में। फिल्म का कुछ हिस्सा विदेशों में भी शूट किया जा सकता है, जो इसे और आकर्षक बना सकता है। अगर यह प्रोजेक्ट सही तरीके से बनता है, तो यह कंगना के करियर के लिए गेम-चेंजर साबित हो सकता है। हालांकि, उनकी पिछली रिलीज 'इमरजेंसी' में उन्होंने इंदिरा गांधी का किरदार निभाया था, पर वे दर्शकों को खास प्रभावित नहीं कर पाई। इससे यह साफ है कि सिर्फ विषय या किरदार बड़ा होने से फिल्म सफल नहीं होती प्रेजेंटेशन और कनेक्ट भी उतने ही जरूरी हैं।

कंगना की सबसे बड़ी ताकत उनका अभिनय है। वे अपने किरदार में पूरी तरह डूब जाती हैं और स्क्रीन पर एक अलग ही प्रभाव छोड़ती हैं। लेकिन, उनकी चुनौती अब सिर्फ अभिनय तक सीमित नहीं है। उन्हें अपने इमेज मैनेजमेंट पर भी ध्यान देना होगा। आज के दौर में सोशल मीडिया किसी भी स्टार की छवि को बना भी सकता है और बिगाड़ सकता है। कंगना इसका सबसे बड़ा उदाहरण रही हैं। अगर वे विवादों से थोड़ी दूरी बनाकर अपने काम पर फोकस करती हैं, तो उनके पास वापसी का पूरा मौका है। लेकिन, अगर वे लगातार राजनीतिक बयानबाज़ी और विवादों में उलझी रहीं, तो यह उनकी दूसरी पारी के लिए नुकसानदायक हो सकता है।

फिल्म इंडस्ट्री में कमबैक करना आसान नहीं होता, खासकर तब जब पिछला रिकॉर्ड मिश्रित रहा हो। कंगना रनौत के पास अनुभव, प्रतिभा और एक मजबूत स्क्रीन प्रेजेंस है, जो उन्हें बाकी अभिनेत्रियों से अलग बनाता है। अंततः, कंगना की दूसरी पारी सिर्फ फिल्मों की वापसी नहीं है, बल्कि यह उनके करियर की सबसे बड़ी परीक्षा है। 'क्वीन 2' जैसी फिल्में उन्हें फिर से शीर्ष पर पहुंचा सकती हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें सही चुनाव, संतुलित छवि और पूरी तरह अभिनय पर ध्यान देना होगा। अब नजर इस बात पर है कि क्या कंगना रनौत एक बार फिर 'क्वीन' बनकर उभरेंगी या उनकी यह पारी भी अधूरी कहानी बनकर रह जाएगी।

रियल बॉक्स

जब गीत की धुनों ने रची इतिहास की धुन!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मी गीतों के इतिहास में ऐसे अनेक दिलचस्प प्रसंग मिलते हैं। एक मशहूर किस्सा फिल्म 'मुगल-ए-आज़म' के गीत 'प्यार किया तो डरना क्या' से जुड़ा है। बताया जाता है कि इस गीत के भव्य दृश्यांकन के लिए शीश महल का विशाल सेट बनाया गया था और इसे फिल्माने में लंबे समय और भारी खर्च लगा। बाद में यही गीत फिल्म की पहचान बन गया। इसी तरह फिल्म 'मेरा नाम जोकर' का गीत 'जीना यहां मरना यहां' भी दिलचस्प कहानी समेटे हुए है। कहा जाता है कि यह गीत कहानी के भाव को समेटने के लिए बाद में जोड़ा गया और अंततः वही फिल्म की आत्मा बन गया। वहीं कुछ गीत ऐसे भी रहे जो रिकॉर्ड होने और फिल्माए जाने के बाद भी अंतिम संपादन में हटा दिए गए। कई बार फिल्म की लंबाई, कहानी की गति या बदलती परिस्थितियों के कारण ऐसे फैसले लेने पड़े। इन रोचक घटनाओं से स्पष्ट है कि फिल्मी गीत केवल धुन और शब्द नहीं होते, बल्कि उनके पीछे भी एक अनकही कहानी छिपी होती है, जो भारतीय सिनेमा के इतिहास को और भी रंगीन बनाती है।

इन्हीं कहानियों में एक बेहद मशहूर किस्सा जुड़ा है 1960 में आई फिल्म 'काला बाजार' के गीत खोया खोया चांद से। कहा जाता है कि इस गीत के बोल एक माचिस की डिब्बी पर लिखे गए थे। उस दौर में फिल्म के निर्माता और अभिनेता देव आनंद थे और संगीतकार थे महान सचिन देव बर्मन। गीत लिखने की जिम्मेदारी मशहूर गीतकार शैलेन्द्र को दी गई थी। कहानी कुछ यूं है कि शैलेंद्र बेहद व्यस्त थे और गीत लिखने में देरी हो रही थी। तब एसडी बर्मन ने अपने बेटे राहुल देव बर्मन यानी पंचम दा को भेजा कि वे शैलेंद्र से गीत लिखवाकर ही लौटें। दोनों रात में मुंबई के जुहू बीच पर टहलते हुए धुन और शब्द तलाश रहे थे। समुद्र की लहरें, आसमान में पूरा चांद और सन्नाटा माहौल बेहद काव्यात्मक था, लेकिन शब्द अभी भी गायब थे। इस बीच शैलेंद्र की माचिस खत्म हो गई और उन्होंने पंचम दा से माचिस मांगी। पंचम दा ने उसी डिब्बी पर ताल देते हुए धुन गुनगुनाई। बस, वही क्षण गीत के जन्म का क्षण बन गया। शैलेंद्र ने आसमान की ओर देखा और अचानक बोल निकले 'खोया-खोया चांद, खुला आसमान ...!' पास में कागज-कलम नहीं था, तो पंचम दा ने तुरंत माचिस की डिब्बी पर ही शब्द लिख लिए। बाद में इस गीत को मोहम्मद रफ़ी की आवाज मिली और यह गीत हिंदी फिल्म संगीत का अमर हिस्सा बन गया। यह कहानी बताती है कि महान गीत कभी-कभी बेहद साधारण परिस्थितियों में भी जन्म ले लेते हैं।

हिंदी फिल्म इतिहास में ऐसा पहला किस्सा नहीं था। कई गीतों के पीछे ऐसी घटनाएं हैं जो आज भी संगीत प्रेमियों को रोमांचित करती हैं। उदाहरण के लिए 1964 की फिल्म 'संगम' का प्रसिद्ध गीत 'दोस्त दोस्त ना रहा' को गाने के लिए पहले किसी और गायक पर विचार किया गया था, लेकिन अंततः अभिनेता-निर्माता राज कपूर ने फैसला किया कि यह गीत मुकेश ही गाएंगे। मुकेश की दर्द भरी आवाज ने इस गीत को इतना असरदार बना दिया कि यह दोस्ती और विश्वासघात का प्रतीक बन गया। इसी तरह 1957 की फिल्म 'प्यासा' का गीत 'ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है' भी अपने बनने की कहानी के कारण खास माना जाता है। निर्देशक गुरु दत्त चाहते थे कि यह गीत फिल्म के चरम भावनात्मक क्षण को व्यक्त करे। संगीतकार सचिन देव बर्मन और गीतकार साहिर लुधियानवी के बीच इस गीत के मूड को लेकर लंबी चर्चा हुई। कई ड्राफ्ट के बाद जब अंतिम शब्द बने और मोहम्मद रफ़ी ने उसे गाया, तब जाकर वह गीत सिनेमा के इतिहास में दर्ज हो गया।

समय यह एक साहसिक प्रयोग माना गया, क्योंकि दर्शक फिल्मों में गीतों के आदी थे। दूसरी ओर कुछ फिल्में ऐसी भी बनीं जिनमें गीतों की भरमार थी। 1952 की फिल्म 'बैजू बावरा' इसका शानदार उदाहरण है। संगीतकार नौशाद ने इस फिल्म में शास्त्रीय संगीत पर आधारित कई गीत तैयार किए, जिनमें ;मन तड़फत हरी दर्शन को आज' और 'ओ दुनिया के रखवाले' आज भी संगीत प्रेमियों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। इन गीतों ने यह साबित किया कि शास्त्रीय संगीत भी मुख्यधारा सिनेमा में दर्शकों का दिल जीत सकता है। गीतों के मुखड़े और अंतरे को लेकर भी कई दिलचस्प घटनाएं हुई हैं। कभी-कभी एक छोटा सा शब्द पूरे गीत की पहचान बन जाता है। 1969 की फिल्म 'आराधना' के गीत 'मेरे सपनों की रानी' को ही लें। संगीतकार सचिन देव बर्मन उस समय बीमार थे, इसलिए उनके बेटे आरडी बर्मन ने रिकॉर्डिंग की जिम्मेदारी संभाली। गीतकार आनंद बक्षी के

कभी-कभी गीत बनने के बाद भी फिल्म का हिस्सा नहीं बन पाते। 1965 की फिल्म 'गाइड' के निर्माण के दौरान भी ऐसा हुआ था। निर्देशक विजय आनंद और अभिनेता देव आनंद की इस फिल्म में कई गीत रिकॉर्ड किए गए, लेकिन संपादन के दौरान कुछ गीतों को हटा दिया गया ताकि कहानी की गति बनी रहे। हालांकि जो गीत फिल्म में रहे, जैसे 'आज फिर जीने की तमन्ना है' और 'तेरे मेरे सपने' भारतीय फिल्म संगीत के क्लासिक बन गए। इसके विपरीत कई बार ऐसा भी हुआ कि गीत आखिरी समय में फिल्म में जोड़ा गया और वह सबसे ज्यादा लोकप्रिय हुआ। 1971 की फिल्म 'आनंद' का गीत 'जिंदगी कैसी है पहेली' इसका अच्छा उदाहरण है। निर्देशक हृषिकेश मुखर्जी चाहते थे कि फिल्म के अंत में जीवन के रहस्य को दर्शाने वाला एक गीत हो। संगीतकार सलिल चौधरी और गीतकार योगेश ने मिलकर यह गीत तैयार किया, जिसे मन्ना डे ने गाया। यह गीत फिल्म के दर्शन को बेहद खूबसूरती से व्यक्त करता है।

हिंदी सिनेमा में ऐसे भी दौर आए जब बिना गीत वाली फिल्मों का प्रयोग किया गया। उदाहरण के तौर पर 'इत्तेफ़ाक़' को बिना किसी पारंपरिक गीत के बनाया गया था। निर्देशक यश चोपड़ा की इस फिल्म में केवल बैकग्राउंड म्यूजिक था। उस समय सरल शब्द और किशोर कुमार की मस्ती भरी आवाज ने इस गीत को युवाओं का एंथम बना दिया।

इन तमाम कहानियों से यह साफ होता है कि फिल्मी गीत केवल स्टूडियो में बैठकर नहीं बनते। कभी समुद्र किनारे टहलते हुए धुन जन्म लेती है, कभी किसी कवि को अचानक कोई पंक्ति सूझ जाती है, तो कभी निर्देशक और संगीतकार के बीच लंबी बहस के बाद कोई गीत आकार लेता है। आज के डिजिटल दौर में जब कंप्यूटर और आधुनिक तकनीक से संगीत बनता है, तब इन पुराने किस्सों को सुनना और भी रोमांचक लगता है। उस समय कलाकारों के पास सीमित साधन थे, लेकिन कल्पना शक्ति असीमित थी। शायद यही वजह है कि उस दौर के गीत आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। दरअसल, हिंदी सिनेमा के गीतों की यही खूबसूरती है, वे केवल फिल्म का हिस्सा नहीं होते, बल्कि समय के साथ संस्कृति का हिस्सा बन जाते हैं। चाहे वह माचिस की डिब्बी पर लिखा गया कोई मुखड़ा हो या अचानक रिकॉर्ड हुआ कोई गीत, हर धुन के पीछे एक कहानी छिपी होती है। और यही कहानियां फिल्म संगीत के इतिहास को इतना जीवंत और दिलचस्प बनाती हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अब सौरभ गांगुली पर बन रही बायोपिक

बॉलीवुड की दुनिया में बायोपिक का चलन काफी पुराना रहा है। बायोपिक फिल्मों को बॉक्स ऑफिस पर भी कई बार जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल जाता है। अब एमएस धोनी और कपिल देव के सौरव गांगुली की बायोपिक भी जल्द बॉक्स ऑफिस पर दस्तक देने वाली है। पूर्व भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान सौरव गांगुली की बायोपिक में अभिनेता राजकुमार राव उनका किरदार निभाते दिखाई देने वाले हैं। राजकुमार राव ने हाल ही में सोशल मीडिया पर

ऐलान किया है कि फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है।

राजकुमार राव ने एक क्राउसल फोटो शेयर करते हुए फिल्म का टाइटल रिवील कर दिया है। पहली फोटो शेयर करते हुए राजकुमार राव ने लिखा 'और ये शुरू हो चुका है ... सिर्फ और सिर्फ 'दादा।' राजकुमार राव को पोस्ट से साफ है कि फिल्म का नाम 'दादा : द सौरव गांगुली स्टोरी' है। इस किरदार के बारे में बात करते हुए सौरव गांगुली ने कहा 'मैं घबराया हुआ हूँ ... यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, लेकिन यह बहुत मज़ेदार भी होने वाला है'।' प्रशंसकों की खुशी के लिए, राजकुमार राव ने इंटरव्यू के दौरान अपनी बंगाली बोलने की क्षमता भी दिखाई। यह एक ऐसी भाषा है जिसे उन्होंने वर्षों में अपनी पत्नी, अभिनेत्री पत्रलेखा की वजह से सीखा है, जो बंगाली हैं।

सलीम जावेद से ज्यादा सफल थे गुलशन नंदा

अशोक जोशी

फिल्मों के सफल कहानीकारों में गुलशन नंदा सबसे चर्चित नाम है। उनके उपन्यास में एक खासियत यह भी थी कि इन्हें पढ़कर महिला पाठक आंसू नहीं बहाया करती, बल्कि प्रेम की चाशनी में डूबकर रोमांटिक माहौल में खुद को

पाती थी। उनके लेखन की रूमानियत ने उन्हें गली मोहल्लों से लेकर बॉलीवुड तक में लोकप्रिय कर दिया था। साठ के उत्तरार्ध से लेकर अस्सी में मध्य तक गुलशन नंदा के उपन्यासों पर फिल्में भी बनना शुरू हो गई और किताबों की ही तरह हिट भी होने लगी थी।

हिंदी सिनेमा में चर्चा आम है कि लेखकों को नाम और दिलाने में सलीम जावेद की जोडी का नाम सबसे पहले और सबसे ऊपर आता है। लेकिन, एक और लेखक हुए जिन्होंने सलीम जावेद की जोड़ी से पहले और उनके समय में भी फिल्मी कथाकारों को नाम और दाम दोनों दिलवाए। यह थे 60 से 80 के जमाने में सबसे ज्यादा बिकने वाले उपन्यासकार गुलशन नंदा। यह ऐसे लेखक थे जिनके न केवल उपन्यास घर घर पढ़े जाते थे, बल्कि उन पर बनी ज्यादातर फिल्मों ने बॉक्स आफिस पर आशातीत सफलता भी प्राप्त की है। यह वह दौर था जब मुहल्लों में बनी लाइब्रेरियों में जासूसी उपन्यासों के बाद सबसे ज्यादा मांग गुलशन नंदा के उपन्यासों की थी। मजे की बात तो यह थी कि उन दिनों गुलशन नदा के पाठकों में महिलाओं तथा लड़कियों की संख्या सबसे ज्यादा हुआ करती थी।

गुलशन नंदा का जन्म सन 1929 को गुजरांवाला (अब पाकिस्तान) में हुआ था। विभाजन से पूर्व ही उनका परिवार दिल्ली आ गया था। गुलशन नंदा का शुरूआती जीवन बड़े कष्टों में बीता । वह दिल्ली के बल्लीमारान बाज़ार में एक चश्मे की दुकान पर मामूली वेतन पर काम करते थे। गुलशन नंदा की अद्भुत कल्पनाशीलता से प्रभावित पड़ोस के एक बुजुर्ग ने उन्हें उपन्यास लेखन की सलाह दी। जिसे गुलशन नंदा ने गम्भीरता से लिया और वे पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से लेखन की तरफ अग्रसर हुए। उन्हें एनडी सहगल नामक प्रकाशक ने पहली बार छपने का मौक़ा दिया। उस वक़्त उन्हें एक उपन्यास के 100 से 200 रुपए मिला करते थे। धीरे-धीरे उनकी कामयाबी और लोकप्रियता बढ़ने लगी और मिलने वाली रकम भी। आगे चलकर एक वक़्त ऐसा आया कि वो जो भी रकम मांगते, उन्हें मिल जाती। गुलशन नंदा ने 1960 और 1970 के दशक में पॉकेट बुक्स की दुनिया को जिस ऊंचाई पर पहुंचाया, उसके बारे में किसी ने सोचा नहीं था। जब उनके उपन्यास तहलका मचाने लगे तो वह बंबई चले गए। वहां उन्होंने फिल्मी लेखन में हाथ आजमाया और दो दर्जन से अधिक सफल फिल्मों की कहानियां लिखीं।

फिल्म वालों ने भी उन्हें हाथों-हाथ लिया। राम माहेश्वरी और पन्नालाल माहेश्वरी की फिल्म 'काजल' से हिट फिल्मों का ऐसा सिलसिला चला कि रुका नहीं। गुलशन नंदा का नाम फिल्म की हिट होने की ज़मानत बन गया। 20 साल तक चले इस रिश्ते में फिल्मी दुनिया के सारे दिगज निर्माता-निर्देशकों ने इनकी कहानियों और पटकथाओं पर सफल फिल्में बनाईं। इनमें शामिल हैं यश चौपड़ा, शक्ति सामंत, प्रमोद चक्रवर्ती, एलवी प्रसाद और रामानन्द सागर। यह भी संयोग की बात है कि जिन दिनों फिल्मी दुनिया में रोमांस के बादशाह के रूप में राजेश खन्ना उभर रहे थे। गुलशन नंदा के रूमानी उपन्यास भी उन्हीं दिनों आसमानी बुलंदियों को छू रहे थे। राजेश खन्ना और गुलशन नंदा का साथ भी खूब फला फूला। दोनों के संयोग से बनी कटी पतंग, अजनबी, महबूबा, भंवर और 'नजराना' सभी की सभी हिट साबित हुई।

फिल्मफेयर अवॉर्ड के 'बेस्ट स्टोरी' वर्ग में

गुलशन नंदा का नामांकन कई बार हुआ। 1966 में काजल, 1969 में नीलकमल, 1971 में 'खिलौना' और फिर 1972 में 'कटी पतंग' तथा 'नया जमाना' फिल्मों के लिए उनका नामांकन हुआ। गुलशन नंदा के उपन्यासों पर आधारित फिल्मों में काजल (1965), सावन की घटा (1966), पत्थर के सनम (1967), नील कमल (1968), 'खिलौना' (1970), कटी पतंग (1970), शर्मीली (1970), नया ज़माना (1971), दाग़ (1973), झील के उस पार (1973), जुगनू (1973), जोशीला (1973), अजनबी (1974), भंवर (1976), महबूबा (1976) शामिल है। 1987 में रिलीज़ हुई राजेश खन्ना, श्री देवी की फिल्म 'नज़राना' उनकी अखिरी फिल्म थी। 16 नवम्बर 1985 को गुलशन नंदा की मृत्यु हुई।

गुलशन नंदा की सफलता का कारण यह था कि उनके खजाने में पूरा 'मसाला फार्मूला' था जिसमें बहुत ही सरल भाषा में संयमित सेक्स वार्ता, संस्कार की दुहाई, अमीरी-ग़रीबी, न्याय-अन्याय और प्रेम की सर्वोच्चता का भाव समिलित था। इस सबके बावजूद गुलशन नंदा के मन में एक टीस थी, वह थी हिन्दी साहित्य में अस्वीकृति की। तमाम सामाजिक स्वीकृति के बावजूद वहां उन्हें स्वीकार नहीं किया गया। हिंदी की प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था हिन्द पाकेट बुक्स ने उन्हे अपने स्तरीय प्रकाशनों में स्थान देने से इंकार की पॉलिसी बना रखी थी। लेकिन, यह सिलसिला भी आखिर टूट ही गया। 70 के दशक में आखिरी में हिन्द पॉकेट बुक्स ने अपनी हार मानते हुए पाठकों के फैसले का सम्मान करते हुए गुलशन नंदा से प्रकाशन के लिए पुस्तक मांगी। इस बार गुलशन नंदा ने प्रस्ताव अपनी शर्तों पर ही स्वीकार किया। मुंहमांगी अग्रिम राशि ली, पुस्तक के प्रचार की शर्ते मनवाई. मतलब उनकी हर चीज़ मानी और 'झील के उस पार' नामक उपन्यास प्रकाशित किया.

इसी पुस्तक के रिलीज़ के आसपास ही 1973 में भप्पी सोनी निर्देशित धर्मेन्द्र-मुमताज़ और योगिता बाली के साथ इसी नाम की फिल्म भी रिलीज़ बनी। हिंदी पुस्तक प्रकाशन के इतिहास शायद ही इससे पहले या फिर इसके बाद में इस तरह का प्रोमोशन किसी किताब का हुआ हो। देश भर के अखबारों, पत्रिकाओं, रेडियो पर प्रचार के अलावा होटल, पान की दुकान से लेकर सिनेमाघरों तक बड़े-बड़े प्रचार पोस्टर और खास तौर डिज़ाईन किए गए टांगने वाले बाक्स लगाए गए। इन सब में इस बात पर ज़ोर था कि पहली बार हिन्दी में किसी पुस्तक का पहला एडीशन ही 5 लाख कॉपी का छापा गया। यही वह समय था, जब उनकी पुस्तकें अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होकर उसी धड़ल्ले से बिक रहीं थी। अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं में धूम मच गई थी। 'कटी पतंग' के चीनी भाषा के अनुवाद ने तो वहां बिक्री के रिकार्ड ही कायम कर दिए। सबसे अचरज की बात तो यह है कि जिस हिंदी उपन्यासों और फिल्मों ने गुलशन नंदा को बुलंदियों पर पहुंचाया, उसी हिंदी भाषा को पढ़ने-लिखने में गुलशन नंदा को परेशानी होती थी और उनका तमाम लेखन उर्दू में ही हुआ।

थोड़ी दूर जो एक पेड़ था...!

बाखबर

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

नानी के गांव रजला (नागदा) सिर्फ एक मोटर आती थी। दोपहर बाद कभी भी। कभी भी इसलिए की समय का उस समय कोई साधन नहीं था, सुबह होती थी, शाम होती थी...! उन दिनों मोटर ही कहने का चलन था। तब तक बस का प्रादुर्भाव या तो हुआ नहीं था, या उस गांव तक नहीं पहुंचा था। जब गांव के मन्दिर से दूर उड़ती धूल का गुबार उठता था तो गांव में बिजली से भी तेज खबर फेल जाती थी 'मोटर आई रे है!'

गरमी की छुट्टियां नानी या दादा या रिश्तेदार के यहां बिताने आये बच्चे दौड़ पड़ते थे गांव के बाहर बड़ के पेड़ के नीचे। कई बार तो यही लगता था की मोटर से ही होड़ हो रही है कि कौन पहले पहुंचता मोटर स्टेंड। यह तो सुविधा के लिए लिख दिया मैंने, वरना तो कौन जानता था की बस स्टेंड किस बला का नाम है! दिन भर में यही ऐसा रोमांच होता था कि जिसके लिए सुबह से इन्तजार रहता था। बस जैसी नहीं थी मोटर, गर्भवती की तरह उसका अगला हिस्सा बाहर निकला रहता था। तब हॉर्न की भी इजाद शायद नहीं हुई होगी, क्योंकि उस मोटर में भोंपू लगा रहता था और उसके ठीक पास हाथ से सीधे हाथ की तरफ मुड़ने का संकेतक यानी तीर लगा होता था, जो ड्राइवर ही चला सकता था।

भोंपू और इंडिकेटर एक साथ नहीं चल सकते थे कि दूसरे हाथ से चक्का यानी स्टेयरिंग भी तो थामना होता था। बाबू था ड्रायवर महाशय का नाम, जो गले में लाल रुमाल बांधे रहता और एक हाथ से खिड़की का पल्ला पकड़े रहता और दूसरे से मोटर हांका करता था। तब बाबू भिया हमारे लिए देवदूत या नान बायलाजिकल ही थे कि इस तरह कोई और गाड़ी चला कर तो दिखाए। चूंकि उस समय तक सड़क या डामर रोड की पहुंच गांव तक नहीं हुई थी तो गाड़ी-गडार यानी बैल-गाड़ी या दमणी के लिए नेचरल पथ था, जिस पर किसान अपने हल बक्खर और बल्दया यानी बैल लिए पैदल चले जाते थे। यह रास्ता खुद ही अपनी मंजिल तय करता था, कोई बनाता नहीं था

जब मोटर आ कर रूकती तो इतनी धूल उड़ती कि आज के हेलिकाप्टर भी क्या खा कर उड़ाते होंगे। उस दौरान मोटर में खिड़की की खोज तो हो चुकी थी, लेकिन शीशे का आविष्कार नहीं हुआ था। गांव में मेहमान आता तो धूल-धूसरित देख कर ही समझ आ जाता कि मोटर से आये हैं। उन्हें ऐसी नजरों से देखा जाता, जैसे आजकल विदेश पलट को देखा जाता है। सबसे पहले मेहमान के नहाने का इंतजाम होता। कुछ तो सीधे कुएं पर ही ले जाए जाते कि पहचान में तो आयें कि अपने ही पामणे हैं। मोटर से उतरा मेहमान जो हमारा होता है, जान से प्यारा होता है' सम्मान हासिल कर लेता। इतने बच्चे उत्साह से स्वयम सेवक बन जाते कि मेहमान पैदल चल ले, तो गनीमत। कुछ पता नहीं किस घर का है, लेकिन बोरिया बिस्तर लिए भागे चले जा रहे हैं।

घनी छांह रहती थी वट-वृक्ष की। बरात तक वहां जनवासा कर लेती थी। उसकी जड़ें किसी सोफे से कम आरामदेह नहीं होती थी कि मोटर का आना-जाना नहीं हो तो भी घर से झगड़ कर या परेशान या सटोरिये या नशेड़ी यहां अड्डा जमाए रहते। पुलिस का कोई रोल नहीं था कि गांव में डाका पड़ता तो ही कभी इधर झांकती थी। ऐसे भी नरपुंगव यहां मिल सकते थे कि जिनके खानदान में किसी ने पुलिस को सजीव हालत में नहीं देखा, सिर्फ कल्पना ही की। बस-स्टैंड का कोई ओर- छोर नहीं था तो जगह की कमी कभी नहीं होती थी। मोटर का आना जाना भी भाग्य से नत्थी हो जाता था कि मालुम पड़ा मंडावल में ही मोटर-एंड हो गई और अब कब सुधरेगी नहीं पता। दो-चार दिन या एक दो हफ्ते। लाटरी खुलने की तरह होता था मोटर का आना।

मोटर आये ना आये, मन्दिर की तरह दर्शनार्थी पूरी निष्ठा और लगन से हाजरी लगाते। तथाकथित मोटर स्टेंड ,ऊपर से भले ही सूख जाए नीचे तो हराभरा ही रहता था। कहां जा रहे हैं, मोटर के लिए, कहां से आ रहे हैं तो मोटर के यहां से। मोटर चली जाती तो यूं लगता ना जाने कितनों को बेकार कर गई अगले दिन तक के लिए। ना जाने कौन-कौन से मुकेशी गाने उस समय याद आते 'चल री सजनी, अब क्या सोचे', 'जाने वाले हो सके तो लौट के आना'।

अपना कोई कहीं नहीं गया, लेकिन यूं लगता था जैसे पांडव जुए में हस्तिनापुर हार के आ रहे हैं।

आज ये मोटर यानी बस की बात इसलिए याद आ रही है की इन्दौर में आइ-बस के लिए बने भव्य स्टेशन अब टूट चुके हैं और थोड़ी थोड़ी दूर पर किसी पेड़ की छाँह में इन्दौरी इन्तजार करते रहते हैं सर पर कपड़ा डाले। बार यूं हथेली को आंख के सामने ला कर वैसे ही दूर तक ताकते हैं, जैसे गांव की मोटर का रस्ता देखा जाता था। अजनबी तो अंदाजा भी नहीं लगा पाए की ये एसी बस यहां रुकती भी होंगी। भूषण कवि होते तो जरुर लिखते 'ऊंचे घोर मंदर में रहन वाली, ऊंचे घोर मंदर के अन्दर रहाती हैं!' मतलब हिंदी के प्राध्यापक से पूछ लें, यदि पढ़ा नहीं हो तो!

स्कूलों का बंद किया जाना शिक्षा की सुनियोजित मौत है

मुद्दा

डॉ. नरेश गौतम

लेखक रायपुर में समाजकार्य विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।

देश में पिछले एक दशक से लगभग हर राज्य में स्कूल बंद करने का काम बहुत ही सुनियोजित और व्यवस्थित तरीके से जारी है। यह सिर्फ एक आँकड़ा भर नहीं है, बल्कि ग्रामीण और गरीब बच्चों के भविष्य पर सुनियोजित हमला है। पिछले दस वर्षों में देशभर में 93 हजार से अधिक सरकारी स्कूल बंद हो चुके हैं। हिन्दी भाषी प्रदेशों में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश इस मामले में सबसे आगे हैं, जबकि बिहार, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और ओडिशा जैसे प्रदेश भी पीछे नहीं हैं। मध्य प्रदेश में यह संख्या लगभग 30 हजार है और उत्तर प्रदेश में लगभग 25 हजार। सुदूर गांवों और गरीब इलाकों में, जहां सरकारी स्कूल ही बच्चों की पढ़ाई का एकमात्र साधन हैं, वहां सबसे अधिक स्कूलों की आवश्यकता है। ऐसे स्थानों के स्कूलों को बंद करना सरकार की मंशा को दर्शाता है कि वह नहीं चाहती कि गरीबों के बच्चे शिक्षित हों और वे भी आगे बढ़ सकें। सरकार इसे रेशनलाइजेशन या स्कूल मर्जर का नाम देती है। कहा जाता है कि जिन स्कूलों में कम बच्चे हैं, उन्हें बड़े स्कूलों में मिला दिया जाए ताकि संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सके। लेकिन असलियत यह है कि इससे गरीब बच्चों के लिए पढ़ाई और कठिन हो रही है, वे शिक्षा से दूर हो रहे हैं। सरकारी स्कूलों में अधिकतर वही बच्चे पढ़ने जाते हैं जो आर्थिक तौर पर कमजोर हैं, सामाजिक तौर पर देखें तो वंचित तबके के बच्चे ही ज्यादातर सरकारी स्कूलों में रह गए हैं। पहले गांव में ही स्कूल हुआ करते थे, लेकिन मर्जर के बाद बच्चों को कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। छोटे बच्चों और खासकर लड़कियों के लिए यह और भी मुश्किल हो जाता है। कई परिवार सुरक्षा, खर्च और दूरी के साथ-साथ जागरूकता की कमी के कारण बच्चों को स्कूल भेजना ही बंद कर देते हैं।

यह सवाल उठना जरूरी है कि आखिर सरकारी स्कूल बंद क्यों हो रहे हैं, जबकि निजी स्कूल लगातार बढ़ रहे हैं। देश में निजी स्कूलों की संख्या तेजी से बढ़ी है और शिक्षा अब सेवा नहीं, बल्कि अधिकतम मुनाफा बटोरने वाला कारोबार बन गई है। क्योंकि शिक्षा कॉरपोरेट के लिए सबसे फायदेमंद क्षेत्रों में से एक बन चुकी है। शिक्षा का बाजारीकरण इस तरह हो रहा है कि जो परिवार फीस दे सकते हैं, उनके बच्चों के लिए अच्छे स्कूल, अंग्रेजी शिक्षा, कंप्यूटर और कोचिंग उपलब्ध हैं। लेकिन गरीब परिवारों के बच्चे कमजोर सरकारी व्यवस्था पर निर्भर हैं। जब सरकार सरकारी स्कूलों को कमजोर करती है, तो गरीबों को मजबूरी में निजी स्कूलों की तरफ धकेला जाता है। यह सरकारी स्कूलों में शैक्षणिक बदहाली, संसाधनों एवं शिक्षकों की कमी के कारण भी होती है। और जो इन स्कूलों की महंगी फीस और किताबों का बोझ नहीं उठा पाते, वे अपने आप ही शिक्षा के इस संगठित बाजारीकरण की दौड़ से बाहर हो जाते हैं। सरकारी स्कूलों की हालत इसलिए भी खराब होती जा रही है क्योंकि वहां

शिक्षक नहीं हैं। देशभर में शिक्षकों के लाखों पद खाली पड़े हैं। कई स्कूल एक या दो शिक्षकों के भरोसे चल रहे हैं। कहीं पर्याप्त भवन नहीं है, कहीं शौचालय नहीं है, कहीं पानी नहीं है, कहीं बिजली नहीं है। ऐसे में बच्चे स्कूल क्यों आएंगे? सरकार पहले स्कूलों को कमजोर करती है, फिर कम नामांकन का हवाला देकर उन्हें बंद कर देती है। यही हमारे देश की सबसे बड़ी विडंबना है। संसदीय रिपोर्टों में देशभर में लगभग 10 लाख शिक्षक पद खाली होने की बात कही गई है। वहीं गांव और शहर के बीच शिक्षा की खाई लगातार बढ़ रही है। शहरों के बच्चों के पास मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट, कोचिंग, ऑनलाइन क्लास और नई तकनीकें हैं। वहीं गांव का बच्चा आज भी अच्छी किताब, शिक्षक और इंटरनेट के लिए संघर्ष कर रहा है। ग्रामीण इलाकों के बहुत से स्कूलों में अभी भी डिजिटल सुविधाएं नहीं हैं। ऐसे में समान अवसर केवल किताबी बात बनकर रह गया है। सबसे चिंता की बात यह है कि सरकार लगातार शिक्षा का बजट कम करती जा रही है। भारत में शिक्षा पर कुल खर्च जीडीपी के लगभग 4 प्रतिशत के आसपास है, जबकि कई विकसित देशों में यह इससे कहीं अधिक है। हाल के बजट में शिक्षा पर खर्च लगभग 2.7 प्रतिशत जीडीपी के आसपास बना हुआ है, जो बताता है कि शिक्षा अभी भी सरकार की प्राथमिकता नहीं बन पाई है। अगर यही स्थिति जारी रही, तो आने वाले वर्षों में गरीब और अमीर के बीच शिक्षा का अंतर और बढ़ेगा। गरीब बच्चे पढ़ाई छोड़कर मजदूरी, बाल विवाह या छोटे-मोटे कामों में लग जाएंगे। इससे देश की अर्थव्यवस्था भी कमजोर होगी, क्योंकि बिना पढ़े-लिखे और कुशल युवाओं के कोई भी देश आगे नहीं बढ़ सकता। सरकार को स्कूल बंद करने की नहीं, बल्कि उन्हें मजबूत करने की जरूरत है। नए शिक्षकों की भर्ती हो, गांवों में छोटे स्कूल बचाए जाएं, इंटरनेट और कंप्यूटर जैसी सुविधाएं दी जाएं, और शिक्षा को अधिकार की तरह देखा जाए, न कि मुनाफे के बाजार की तरह। क्योंकि अगर स्कूल बंद होंगे, तो केवल इमारतें नहीं बंद होंगी, बल्कि लाखों गरीब बच्चों के सपने भी बंद हो जाएंगे। भारत में शिक्षा का अधिकार कानून बना जरूर है, लेकिन ईमानदाराना तरीके से इसे लागू करने की सरकार की मंशा दिखाई नहीं देती। 2025 तक देश में 3.5 लाख से अधिक निजी स्कूल खुल चुके हैं, जबकि सरकारी स्कूलों की संख्या घटकर 10 लाख से नीचे आ गई है। NEP 2020 आने के बाद भी डिजिटल डिवाइड बढ़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में 70 प्रतिशत स्कूलों में बिजली और इंटरनेट की सुविधा नहीं है। कहीं बिजली है भी तो पंखे खराब पड़े हैं, बल्ब तक नहीं हैं। आज जब शहर के बच्चे ड्रोन टूल्स और कोडिंग सीख रहे हैं, वहीं गांव के बच्चे मजदूरी कर रहे हैं। अब कोई वास्तविक प्रतिस्पर्धा नहीं बची है। RTE के तहत 25 प्रतिशत सीटें निजी स्कूलों में गरीबों के लिए आरक्षित हैं, लेकिन यह व्यवस्था कहीं भी पूरी तरह लागू नहीं होती। कोरोना के बाद 40 प्रतिशत बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया। अगर यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा, तो 2030 तक 50 प्रतिशत ग्रामीण बच्चे अशिक्षित रह जाएंगे। बदहाल शिक्षा व्यवस्था किसी मुल्क की प्रगति का मार्ग प्रशस्त नहीं करती, बल्कि यह गर्त की तरफ बढ़ने के ही दरवाजे खोलती है।

महामृत्युंजय की नगरी उज्जैन की प्रभात

फोटो- जगदीश कौशल

सम्मान

संध्या राजपुरोहित 'प्रेमा माथुर प्रेरणा पुरस्कार

मध्यप्रदेश की सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में सक्रिय संध्या राजपुरोहित को उनके दो दशकों से अधिक समय से किए जा रहे समर्पित कार्यों के लिए 'प्रेमा माथुर प्रेरणा पुरस्कार 2026' से शॉल, श्रीफल एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन सीके बिड़ला हॉस्पिटल्स, जयपुर एवं 'माही संदेश' के संयुक्त तत्वावधान में 'नारी शक्ति सम्मान समारोह 2026' तहत किया गया था। इस गरिमामय आयोजन में देश के 8 राज्यों से आई 36 विशिष्ट महिलाओं को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में 'माला माथुर नारी शक्ति सम्मान', प्रेमा माथुर प्रेरणा पुरस्कार', 'तारा देवी नारी शक्ति सम्मान' एवं 'एलिजाबेथ ज़रीन नारी शक्ति सम्मान 2026' सहित विभिन्न महिला विभूतियों को प्रदान किए गए। कार्यक्रम 'माही संदेश' के संरक्षक सुधीर माथुर, प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन एवं समन्वयक भरत कोराना के निर्देशन में संपन्न हुआ।

उल्लेखनीय है कि संध्या राजपुरोहित ने शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। वे भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के स्वायत्त संस्थान जन शिक्षण संस्थान, उज्जैन में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं तथा लगभग 15 वर्षों तक स्कूली शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहीं। वर्तमान में वे आदिवासी अंचलों में कौशल विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत हैं।